CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फागुन भर हमसे मत बोलऽ

राम बदन राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेहनत के बारहमासा

चाहे 'गँवई गुहार' (कविता-संग्रह) होखे भा 'फिरकी वाली' (उपन्यास), 'शिवायन' (खण्डकाव्य) होखे भा 'कृष्णायन' (प्रबन्ध काव्य) -गँवई जनजीवन के कुशल चितेरा डॉ. रामबदन राय के रचनिहार मन भोजपुरिया संस्कृति आ सामाजिक विसंगति-विद्रूपता के मरमस्पर्शी चित्र उकेरे में लवसान रहेला। लरिकाइएँ से लोक आ जन का सँगहीं कुदरत के क्रिया-कलाप के लाँगट आँख से निरेखत उहाँ के बारीक पड़ताल करत आ रहल बानीं। इहे ओजह बा कि लोक उहाँ के लेखन के जद में हरदम रहल बा- कबो मेहनतकश का रूप में खून-पसेना बहावत, त कबो आध्यात्मिक रंग में रँगाइल। सामाजिक सरोकार त उहाँ के नस-नस में रचल-बसल बा। चइत से फागुन तक के मौसमी सफरनामा 'फागुन भर हमसे मति बोलऽ' खाली मउसम आ ऋतुअन के बदलत मिजाज के कुदरती छटा भर नइखे, सही माने में ई मेहनतकशन के एगो जियतार बारहमासा बा। एगो अइसन बारहमासा, जवना में किसान-मजूर के जिनिगी के तींत-मीठ, नीमन-जबून, दुसवारी-अलचारी, बेसम्हार पीर का बीचे आस-हुलास-उछाह आ जीवटता के सोता फूटत बा। एह में साँच आ कुदरती सुघरता का सँगे शिवत्व के भावो समाहित बा -'भइया जो चइत ना आई/दुनिया दाना बिन मरि जाई।'

कृति में चइत से लेके फागुन तक के हर मउसम, ऋतु आ प्रकृति के जवन चित्र उकेराइल बा, ऊ अद्भुत आ अभिभूत करेवाला बा। रोपनी-सोहनी से लेके कटनी ले, घर-अँगनाई से लेके खेत-खरिहान आ सिवान ले- हर जगहा के जियतार तसवीर आँखिन से होके आँतर में उतरि जात बा आ कवनो दृश्य दिल के कचोटत बा, त कवनो लहालोट कऽ देत बा। सिवान के गह-गह, चिरइन के चह-चह, फूलन के मह-मह का सँगही नेवान अइला पर अँगना-चउका लिपाए, कलसा-पानी पीढ़ा धरे के दृश्य लोक संस्कृति आ कुदरत से अँकवारी भेंट करे के नेह-छोह जगावत बा। हरेक महीना के किसानी राग-रंग, तंगी-तबाही आ रोज-रोज मू-मू के जीए के बेबसी भला केकरा आँतर के ना उदबेगी! इहे उदबेग, इहे

→

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फागुन भर हमसे मति बोलऽ

राम बदन राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रंग-रंग कऽ रंग ई
तरह-तरह तस्वीर
सफर सुहाना बा कलम
खुद मौसम तकरीर

फागुन भर हमसे मति बोलऽ

(चइत से फागुन तक कऽ मौसमी काव्यात्मक सफर)

कवि

राम बदन राय

भोजपुरी संस्थान

3/9, इन्द्रपुरी, पटना-800 024

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला के एक सौ सातवाँ फूल
ग्रंथमाला- सम्पादक : पाण्डेय कपिल

फागुन भर हमसे मति बोलऽ

कवि	:	राम बदन राय
प्रकाशक	:	भोजपुरी संस्थान 3/9, इन्द्रपुरी, पटना-800 024 दूरभाष : 09835640448
सर्वाधिकार	:	कवि
संस्करण	:	पहिला, 2015 ई.
मूल्य	:	दू सौ पचास रुपया मात्र (पेपर बैक) तीन सौ पचास रुपया मात्र (हार्ड बाउण्ड)
अक्षर-संयोजक	:	जे.एम. कम्प्यूटर्स पश्चिमी लोहानीपुर कदमकुआँ, पटना-800 003
मुद्रक	:	महावीर ऑफसेट प्रेस पटना

FAGUN BHAR HAM SE MATI BOLAA

A collection of Poems in Bhojpuri language

By

Ram Badan Roy

₹ 250/- only (P.B.)
350/- only (H.B.)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स

म

र्प

ण

पिता नीयन भाई

स्व० रामबचन जी, झारखण्डेय जी

अग्रज स्मरणीय

स्व० विधुर जी, अचल जी, धीरज जी, शास्त्री नरेन्द्र जी

साथी-सँघाती

स्व० ब्यथित बालेश्वर जी, शहाब हसनैन कादरी जी

गँवई गवइया

स्व० बद्री गुरु 'विद्यार्थी' जी, बच्चू लाल जी, अवधेश जी

यार-दोस्त

स्व. राम निवास जी, पारसनाथ जी, जितेन्द्र सिनहा जी

आ

स्व० भाभी राधिका सिनहा जी, डॉ. जयन्ती भट्टाचार्य जी

क रहि-रहि परे कसक भरल याद

के

सादर-सप्रेम समर्पित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशकीय

भोजपुरी संस्थान के ग्रंथमाला के नवीनतम 107वाँ पुष्प का रूप में एगो खास विषय पर केन्द्रित कविता-संग्रह परोसत हमरा दिली खुशी हो रहल बा । हिन्दी के सुपरिचित कथाकार-कवि प्रो. रामबदन राय समय-समय पर भोजपुरी में भी रचनाशील रहल बाड़न । जवना घरी हम 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के संपादन करत रहलीं, रामबदन जी के पत्रिका से जुड़ाव भइल रहे आ कई गो रचनो से सहयोग मिलल रहे । भोजपुरी में लोक के बिना प्रभावी रचना के कल्पनो ना कइल जा सके । एह संग्रह में ऋतुगीतन आउर मौसमी कवितन के बहाने भोजपुरी अंचल के जीवंत झाँकी प्रस्तुत कइल गइल बा। पुस्तक के सुचिंतित भूमिका डॉ. जनार्दन राय जी लिखले बाड़न, ब्लर्ब सारगर्भित ढंग से भाई भगवती प्रसाद द्विवेदी के आइल बा आउर शुभकामना डॉ. राजेन्द्र भारती के । एह सब का प्रति हम आभार व्यक्त करत बानी । लीक से अलगा हटके लोक जीवन के काव्यात्मक अभिव्यक्ति देबे खातिर हम 'फागुन भर हमसे मति बोलऽ' के कवि के हार्दिक बधाई देत बानी ।

-पाण्डेय कपिल

ग्रंथमाला-संपादक

भोजपुरी संस्थान, पटना-24

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

रपटीली राहों में ध्वनित जिजीविषा के गीत

यशस्वी रचनाकार प्रो. रामबदन राय की गँवई-कोख से उपजी रचनाधर्मिता अन्तर को स्पर्श करती हुई; अनायास ही अवधान आकृष्ट कर लेती है । शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था तक कवि के विभिन्न आयाम हैं । प्रथमतः जहाँ वह गाँव की चन्दन माटी से गुंफित गँवई-गुहार द्वारा नमन करता है, वहीं पर 'फिरकी वाली' (आंचलिक उपन्यास) की आन्तरिक छुवन से दलित-विमर्श की दो टूक बात भी करता है । जहाँ अपनी माटी और करइल के विस्तृत अंचल पर पसरे ऋषि कश्यप के रक्तवंशीय परंपरा का 'कश्यप-कीर्ति' के रूप में ऐतिहासिक विश्लेषण करता है, वहीं पर 'शिवायन' (खण्ड काव्य) की सरस पंक्तियों में स्तुत्यात्मक अभिव्यंजन भी । 'कृष्णायन' (प्रबंध काव्य) तो सचमुच कृष्ण के विराट व्यक्तित्व का ऐसा रागायन है जो महाकवि सूर के साथ पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र की स्मृतियों के आलोक में लौकिक और पारलौकिक संसार का समञ्जन करते हुए सिर्फ और सिर्फ परार्थ में जीने का अर्थ विस्तार करता है । यह है कवि का रचना-संसार, पर उसकी एक किसान-संस्कृति भी है जिसे उसने परम्परा की थाती से पाया, उसी में पला, बढ़ा और कुल के ऊपर उसी से उसका अन्तर्वाह्य सृजित और संस्कारित है । वैसे इतिहास का तो वह अध्येता ही है, पर अपने विभिन्न स्थापनाओं में जो चित्र उरेहता है, उससे उसे बहुआयामी व्यक्तित्व का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धनी मानने में किसी को भी संकोच नहीं होना चाहिए । निबन्धकार, उपन्यासकार, नाटककार, रिपोर्ताज- लेखक और कवि का अन्तर-कलेवर उसे इस प्रकार धकियाता है कि 'प्राध्यापक-व्यक्तित्व' को विद्या मंदिर-परिसर में छोड़; कैशोर्य प्रभाव में खेत-खलिहान, डंड़ार, बन-बगान, कटिया, दंवरी-ओसावन के जो चित्र खींचता है, वह महानगरीय खिड़की से देखकर नहीं उरेहा जा सकता । 'कटिया पर बिनिया एलनिया', 'छैला काटे गोरिया कगरी', 'जस अइंजन चले मोकामा' में अन्तर्निहित भाव और शब्द-चित्र किस ऊँचाई तक उड़ा ले जाते हैं, उसमें रमे औरे जिये बिना कुछ कहना बड़ा मुश्किल है । 'कुच-कसनी में से उचक उचक, ऊपर दलके नीचे आवे' और 'पायल बाजे झन झनक झनक' जैसी पंक्तियाँ कवि की जिन्दादिली और सूक्ष्म-निरीक्षण शक्ति की परिचायक हैं । 'चहुँ निनियाँ जादू घोर गइल', 'अचके में तबले भोर भइल' की मर्म-स्पर्शिनी अभिव्यञ्जना किस कठकरेजी को नहीं बेधेगी ? 'खस्टहिया चोली ना चली' में कथ्य कम भाव उड़ान की हकीकत को पहचानना कोई सामान्य बात नहीं । 'आवऽ देखऽ नउगी बेला' और बलिया क ददरी का कहलऽ' देखे, भोगे दृश्य-चित्र हैं जो क्षण भर के लिए दिल को बाँध लेते हैं और साथ ही 'कैलाश गौतम' की स्मृति को भी खड़ा कर देते हैं । 'कब से भरसंइया बा जरल' और-/ 'जे सतुआ मकुनी का काटल/संग चौचक चोखा ना चाखल/भइया हो जनम अकारथ हऽ/जे महिया सतुआ ना चाटल ।' जैसी पंक्तियाँ गँवई अभिव्यक्ति और अर्थवत्ता को अभिव्यंजित करती हैं, वहीं पर जाने-अनजाने अभाव भी सहज ही छलक उठता है ।

प्रो. रामबदन राय के चेहरे पर किसान-मजूरों का दर्द भले न दिखता हो, पर कसक पीर जो कविताओं में रेखांकित है, को पढ़कर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है । वाकई, उनकी कविताओं में गाँव है और इर्द-गिर्द सरेह में पसरे-छितरे अभावों का सैलाब भी, पर सबसे अधिक सुखद आश्चर्य तो यह है कि कसमसाहट और कशमकश के बीच स्वभाव में संचित भावों का साम्राज्य उसे सप्राण-सजीव बनाये हुए है । सिवान, डँड़ार, खेत-खलिहान, कटनी कर रहा मजूर और साथ में नवोढ़ा उसके वर्ण्य-विषय हैं । संबंधों के ताने-बाने से विनिर्मित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाज में स्तन-पान कराती महिला के मातृत्व का ज्ञान है तो परोसिन भाभी के उस रूप का भी अभिज्ञान है जब बोझ लिए लचकती कमर वाली को संतृष्ण नजर से देखता है-

/मुर्दा मनई भी उठि जागे/सुनि के चूरी खन खनक खनक/

xx xx xx

पाछे कँवरिया मचर मचर

xx xx xx

/ए स्वेद बुँदकियो भालन पर/बालन का लट्टल गालन पर/सगरी संसार निछावर बाऽ/कोमल पउँवन का छालन पर ।

अभाव की आँच में गाँव चीख रहा है, चिल्ला रहा है, पर उसे विश्वास है कि होली के हुड़दंग और चइत के आगमन के साथ-

अनधन से भरल रही बखरी/तन मन में खुसी रही सगरी
बरहो महीना गाँव-गली/बरसे मस्ती होरी कजरी ।

मस्ती जरूर है पर मदहोशी नहीं । सच्चाई है कि कवि गाँव का शिक्षक-मनई किसान और हरफनमौला गीतकार है । संगीत उसके रोयें-रोयें में परिव्याप्त है । वह अपनी जमीं का सरदार नहीं और न मुखिया मलिकार, पर हर टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चलने वालों की गति-अगति, सुख-दुःख, खींच-तान, उतार-चढ़ाव पर नजर है । जान-बूझकर कुछ नहीं देखता, न ही परखता, पर नजर ही तो है- पड़ जाती है, लग जाती है, और अन्तरावस्थित भाव अनायास छलक जाते हैं, वैसे कवि-कर्म भी तो यही है । ग्राम्याञ्चल तो स्वयं सवाक है उस पर भी जब गाँव का कवि कलम की नोक से रूप को संवारने में उसकी ही माटी-बोली और भाषा का प्रयोग करता है तो शब्द-चित्रों के साथ एक अजीब खुशबू हिय-तल को स्पर्श करने लगती है । साँसों के सरगम से निःसृत भाव-संवलित कथ्य ही तो कविता है । माने तो विविध छन्दों में उभरा 'बारह मासा' यथार्थ से साक्षात्कार का शिष्ट-विग्रह ही है, बटगायन नहीं ।

'सजना से सजनी रूसि गइल' की तड़पन के साथ आषाढ़ किस प्रकार दुलराता है 'सोन्ही सोन्ही महक उठल' में सहज ही देखा जा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकता है । 'भउजी-संइया बइठक मारे', 'केकर हियरा ना हुलसेला' पंक्तियाँ किस जिन्दादिल इन्सान को नहीं झकझोरती । क्वार का कष्ट कवि को तोड़ता है, पर 'जिनिगी किसान के कातिक हऽ', 'सब कुछ सरस उजियरिया' के साथ दूध-सी शरद चाँदनी में संपूर्ण विषाद घुल जाता है । 'महिया क गरम लवाही लऽ' में प्रो. राय, प्रभुनाथ मिश्र की 'तोरा उखिया से मीठ मोर लवाही मितवा' की स्मृति को ताजा कर देते हैं । पौष का जाड़ा और 'कउड़' के पास 'बाबा बनरा वाली कहऽ' की कथा-व्यथा के साथ उभरने वाले अवान्तर प्रसंग जिस बारीकी से गढ़े, बुने और सुनाये जा रहे हैं, उसका मजा ही कुछ और है । 'जै जै माई हो सुरसतिया', 'अजबे खिचड़ी तिहवरवा बा', 'दिन गइल माघ उन्तिस बाकी', 'बुढ़िया भी करत ठिठौली बा', 'फागुन गुंझिया खाके जइहऽ' के साथ 'आईं फागुन से प्यार करीं' में कवि का सहज श्रृंगार बोध भोजपुरी के सिद्ध कवियों की कतार में स्थापित करने के लिए पर्याप्त है ।

'संकलन' में अतिरिक्त भोजपुरी के उसकी ही छौंक से अभिभूत खड़ी बोली की भी कुछ कविताएँ है जिसमें गाँव से पलायन नहीं माटी के प्रति कुर्नुश का अजीब आग्रह है-

'चलो किसी गाँव चलें/जहाँ मिले ठाँव चलें ।'

xx xx xx

अब चारा नहीं गाँव के बिन/सहारा नहीं गाँव के बिन

महाराज स्वामियों के दिन/अयोध्या, ब्रजधामियों के दिन/अब कहाँ नगरों में ?

'पूरब का गर्व-राखी का पर्व' में भाई-बहन का प्यार तो है ही, एक-एक शब्द जिस कदर पिरोये गये हैं, वह भी अपने आप में दृष्टव्य ही है-/ **'सूत सूत अनुस्यूत प्यार है, धागे में राखी के/जिसे बाँध हिय हर्षित बहना उड़ती बिन पाखी के ।' इसी प्रकार,**

'आग लगावन काहें को/मनभावन सावन नाम धराये'

संकलन में वियोग श्रृंगार संबंधी अनगिन चित्र मन-मंथन के लिए पर्याप्त हैं । 'सखी शरद आये' में **'यत्र तत्र हल बैल सिवनियाँ/बाल, पिता को गृह मुड़ेर पर/खञ्जन दिखलाये/सखी शरद आये/'** जैसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनेक छितरे बिम्ब प्रतीक और काव्य पंक्तियों के मथेले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की **'निरखि सखी ये खंजन आये'** की स्मृति को भी ताजा कर दे रहे हैं । **'कुछ गा के कछुक कथवनी कहि'** व **'बद बद बुन्नी बरिसावेला'** जैसी आनुप्रासिक सौंदर्ययुक्त पंक्तियों में 21वीं शताब्दी के उड़ान विज्ञान की उपलब्धियाँ, विद्युत, तार, बल्ब, कम्प्यूटर, वेबसाइट आदि आदि के चित्र भले न हों, पर गँवई प्राकृतिक सौंदर्य भव्यता जिन पारिस्थितिक सन्दर्भों में उकेरित हैं, वाकई वे बेजोड़ हैं- **'फांका परल, मन उछाह होला'**, **'खड़ी पर खाँटी ठेठ भइल'**, **'सँझिया का टाङ उठावत बाऽ'** मुँह झउसाइल', **'ट्रैक्टर क भाड़ा आगि भइल'**, **'पुसवो कऽ बाप भइल मघवा'**, **'दिन गइल माघ उन्तिस बाकी'**, **'करिया अच्छर भंइस बरोबर'**, **'भँइसा लेखा भादो'**, **'सियरा रंग बदलले बाऽ'**, **'चाकी कोहारे भइले सबहीं'** जैसे मुहावरे और लोकोक्तियों से लैस प्रस्तुत रचना वरेण्य है । **'भस्स-भस्स'**, **'कच्च-कच्च'**, **'गट्ट-गट्ट'**, **'घट्ट-घट्ट'** जैसे कई-कई आंचलिक शब्द-युग्म जिस ध्वन्यात्मक अर्थ-संकेत का इजहार कर रहे हैं, इसके लिए कवि के बधाई दी जानी चाहिए । पांजा-विनिया, लबिदा, उचिलावन, इाँच, उमेर, अंगेजल, जैसे विलुप्त होते जा रहे घनेरों शब्दों को पुनर्जीवित कर, प्रो. राय ने भोजपुरी को एक नई अर्थवत्ता प्रदान की है, निश्चय ही उनका यह कृत्य काबिल-ए-तारिफ है । जीवन की रपटीली राहों पर चलते हुए सिवान और सरेह के साथ एकात्म भाव से जिजीविषा के गीत गा रहे कलमकश प्रो. रामबदन राय की लेखकीय वृत्ति को शतशः साधुवाद ।

(डॉ.) जनार्दन राय, एम.ए. (द्वय)
बी.एड., पी-एच.डी., डी.लिट्.
कवि-कुटी, नरहीं, बलिया, पिन-277502
अद्यावधि : मंगल पांडेय नगर, कदम चौराहा,
काशीपुर (नई बस्ती), बलिया
भ्रमण भाषः 09532129125 (प्रातः सायं)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुभाशंसा

बेमिसाल साधक

हमनी के प्रकृति के ऋतुअन में कबो बसंत तऽ कबो पतझड़ फेरू शीत तऽ कबो ग्रीष्म कबो पावस आवत जात रहेला, प्रो. रामबदन राय जी के रचना में ई सब बखूबी बा, लागत बा बारहमासा ।

शब्द के बड़ा सटीक ढंग से इस्तेमाल भइल बा, जेहमें हिन्दी, उर्दू, पारसी आ आंचलिक बोली भोजपुरी में घुलमिल गइल बा, ई बेमिसाल बा ।

राय जी लागत बा जन कवि बानी, जाति, धर्म से ऊपर उठ के मनई के बात, घर, खेत, खरिहान, धर्म में राजनीति, सामाजिक कुप्रथा के उजागर करे में तनिको संकोच नइखीं कइले, बाजारवादी व्यवस्था मानवीय सोच संवेदना के बड़ा मेंही में कुरेदले बानी । प्रतीक के माध्यम से लोकतंत्र के असली चेहरा के चित्र उकेरले बानी, आ संस्कृति के बचाव में संघर्षरत लागत बानी । पर्व-त्योहार के बड़ा बखान कइले बानी ।

वर्ण, शब्द, पद, अर्थ, अलंकार, रस आदि से भरल छन्द भाव के ऊँचाई प्रदान करत बा । सीधा-सादा सपाट भाषा में गंभीर कथन एगो साधक के हो सकेला ।

एह सुन्दर मूल्यवान कृति खातिर रायजी के हार्दिक बधाई ।

श्रीरामनवमी-15
28 मार्च 2015

-डॉ. राजेन्द्र भारती
अभिनन्दन कुटीर
सतनीसराय (बड़ी मठिया)
बलिया-277001
मो० 9307820168

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन बात

किताब का बहन्ने कवि कीर्तन

एह किताब का जरिये अपना बारे में कुछ कहल बड़ा टेढ़ काम बा । बाकिर द्विवेदी जी (भगवती प्रसाद) का आग्रही-आदेश के ठुकरावल भी संभव नइखे । पिछला 40-42 साल से हम भोजपुरी गद्य में कुछ लिखले होखीं, याद नइखे परत । इ सच बा कि हम भोजपुरी माहौल में पैदा भइलीं । पललीं-बढ़लीं । बाकिर शुरू से अन्त तक हमार (हमरे नीयन बहुतन क) कुल्हि पढ़ाई हिन्दीए में भइल । हम जइसे-जइसे आगे बढ़लीं, ओइसे-ओइसे भोजपुरी छुटत गइल, आ खड़ी बोली हिन्दी पकड़ात गइल । संस्कृत आ अँग्रेजी क त बाते दीगर बा, इति., भूगोल, सामा. विज्ञान, राज. शास्त्र तक हर विषय हिन्दीए में पढ़े-लिखे के मिलल ।

एह संदर्भ में एगो घटना याद परत बा । हम डॉ. द्वारिका नाथ जी (हिन्दी विभागाध्यक्ष, डि.का. खरडीहा, गाजीपुर) का साथे दिल्ली गइल रहलीं । डॉ. नामवर जी से भेंट करे क स्कीम बनल । ई भइल कि उनका से भेंट का दौरान, भोजपुरी छोड़ि के, हमनी का हिन्दी क एकहू वाक्य बोलल ना जाई । बातचीत शुरू भइल । हमनी का सँगे-सँगे नामवर जी भी भोजपुरी बोले लगलन । बाकिर लाख सँभरला का बादो, उहाँ का मुँह से मिनट-दू-मिनट पर एगो खड़ी बोली क वाक्य जरूरे निकल जा । 15-20 मिनट तक कसहूँ बातचीत बढ़ल । तबले अचके उहाँ का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोर-जोर से हँसे लगलीं । कहलीं, 'अरे महाराज, इ तोहन लोग घरहीं से सोचि के चलल रहल ह जा का, कि आजु चलिके नामवर के भोजपुरी में पछाड़ देहल जाउ ! त भाई हम हारि गइलीं । का करीं, बहुत दिन से भोजपुरी बोलला क आदते छूटि गइल बा ।' करीब-करीब इहे हाल डॉ. राम दरश मिश्र का सँगे भइल । बाकिर दू-तीन मिनट बाद हमनीं का (खुद ही) उनका से हिन्दी में बोले-बतियावे लगलीं जा ।

अब अपना लेखन क शुरुआती दौरे क कुछ चर्चा ।

1961 क अक्टूबर महीना । तब हम दर्जा छौ क छात्र रहलीं । स्कूल क सांस्कृतिक कार्यक्रम, सनिचर क दिन रहे । डेराते-डेरात हमहूँ खड़ा भइलीं, आपन उरेहल पहिली कविता सुनावे खातिर । एह कविता में भोजपुरी कम, हिन्दी ज्यादा, आ नमक नीयन जहाँ-तहाँ अँगरेजियो रहे । कविता क मथेला हमरो आज भी याद बा-

'सबेरे उठी स्कूल को जाना
झोरा लिया, छाता लिया, बगली में दाना
सबेरे उठी.....'

12-13 साल क कच्ची उमिर । चन-चन आवाज । सुनि के, का लइका-लइकी, आ का मास्टर (शिक्षक), सभे खूब हँसल । कुछ वाह-वाह भी कइले । एह तुकबंदी में टुटल-फुटल शब्दन में, स्कूल में पढ़ाई का दौरान क, दिन भर क लेखा-जोखा रहे । ओह घरी, शायद 1967 तक, हमके ई पता ना रहे, कि भोजपुरी में छपे वाली कवनो पत्रिको होले । पिता जी 'कल्याण' पत्रिका मँगावसु । 'दैनिक जागरण', 'हिन्दुस्तान' आ 'अमर उजाला' आदि क त कहीं पते ना रहे । हँ, कभी कहीं 'आज' अखबार देखे के जरूर मिलि जा ।

हिन्दू डि.का. जमानियाँ गाजीपुर का वार्षिक पत्रिका 'गैरिक वसना' में, हमार पहिली भोजपुरी रचना 'असगुन' 1969 में, आ दोसरकी 'झुठवा सिपरसाद' 1970 में छपल । 1975 में जब पहिली हिन्दी कहानी 'मैं चोर हूँ' 'ज्योत्सना' (पटना) में छपल, त हम बड़ा खुश भइलीं । फेर त 1977 तक कई पत्र-पत्रिकन में हमार बहुते रचना छपली स । बाकिर कहीं से एको पइसा पारिश्रमिक ना मिलल । एह बाति के लेके, राम बचन भइया (एक मात्र सहोदर) हमार खिल्ली उड़ावे लागसु, आ उहो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चार अदमी का सोझा । हमरो बड़ा बाउर लागे, बाकिर चुप लगा जाइल करीं । 1978 में फोटो आ पारिश्रमिक सहित, क्रमशः 'एक और नरसिंह', 'मारे गए गुलफाम' आ 'नई रोशनी के अँधेरे कंचन प्रभा' (कानपुर) में जब ताबड़ तोड़ छपली स, त हमरा अगरइला क सीमा ना रहे । फेर त 1984-85 तक हम धुआँधार लिखलीं-छपलीं । जहाँ-तहाँ से पारिश्रमिको मिल जाइल करे । एह बीच कुछ भोजपुरियो कविता उरेहाइल-छपाइल ।

1985 का बाद कुछ घरऊ किचाइन का चलते लिखल-पढ़ल कम होखे लागल, आ 93 आवत-आवत त एकदमे बंद हो गइल । एकरा चलते हम प्रकाशन का दुनिया में बहुत पीछे छूटि गइलीं । केतने संपादक, प्रकाशक, लेखक आ पढ़निहार हमके भुला गइलन ।

रामबचन भइया आ डॉ. परशुराम (ए घरी इ.का. क प्राचार्य) का बहुत कहला पर, सन् 93 में हम फेर कलम उठवलीं । बहुत दिन से लिखे क रियाज छूटि गइला से थोरे दिक्कत जरूर भइल, बाकिर जल्दिए गाड़ी पटरी पर आ गइल । 'हंस', 'कथादेश', आ 'वैचारिकी संकलन' आदि दिल्ली का स्तरी पत्रिकन में कई गो रचना 97 तक छपि गइली स । एकरा बाद फुटकर लिखल कम हो गइल । हम प्रबंध काव्य 'कृष्नायन' लिखे का चक्कर में परि गइलीं । एसे पहिले 83-84 में एगो कविता संग्रह आ उपन्यास छपि चुकल रहे । आकाशवाणी, वाराणसी से कई रचनन क प्रसारण भी हो गइल रहे ।

ढेर शोहरत हमके धार्मिक पुस्तक 'कृष्नायन' से मिलल । हमरा उपस्थिति में कम-से-कम पचास जगह एकर अखण्ड पाठ संपन्न भइल । एकरा चलते दैनिक 'हिन्दुस्तान' गाजीपुर आ दूरदर्शन केन्द्र मऊ से हमार साक्षात्कारो लेहल गइल । 2009 आवत-आवत 'कृष्नायन' क दोसरका संस्करण छापे के परि गइल । एगो दलितवादी संगी साहित्यकार कहे लगलन, कि ई 'कृष्नायन' ना ह । इनकर पलायन ह, साहित्य का रचनात्मक दुनियाँ से । एह तरे कुछ लोग हमके 'चुकि गइल' लेखकन में ढकेल देहलन । खैर....

अब तक हम का-का पढ़लीं, हमके के-के नीक लागल, प्रभावित कइल, ए कुल क जिकिर बकवास कइल बा । द्विवेदियो (भगवती प्रसाद) जी कहिहें, कि ए पचरा बिना कवन अकाज होत बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एसे अब ए कितबिए का बारे में कुछ कहत बानी । एकर शुरुआत बहुत पहिले सन् 1973 में भइल, कि 74 में, हमरा सही याद नइखे । एतना याद बा, कि ओह दिन होली रहे, आ हम भाँग मिलावल शरबत पी लेले रहलीं । ग्रामदेव जोगेश्वर बाबा का मंदिर (जहाँ तीनो टोल क गवइया साजबाज लेके बिटुरेलन) से, जब हम अपना टोल-गोल का सँगें दुआरी-दुआरी 'सदा अनंद रहे एहि द्वारे....' गावत निकललीं, तब रस्ता में एगो सहुआइन भउजी मुस्कियात भेंटा गइली । खूब सिंगार-पटार कइले रहली । भाँग का नशा में उनका से हमरो कुछ कहा-सुनी हो गइल । उनकर नोनाइल-चोन्हाइल देखि के, हमरो मुँह से अनायासे एगो छंद फूटल-

'कच बस में ना, कुछ बस में ना
रतनार नयनवाँ बस में ना
फागुन भर हमसे मति बोलऽ
का कहि देइब, कुछ बस में ना'

फेर त दस-इगारह बजे घरे अइलीं, दूध सँगे थोरे पूआ खइलीं, आ कलम लेके लिखे बइठ गइलीं । सोचत -लिखत कब बिहान हो गइल, हमके पते ना चलल । जब आँखि झपके लागल, तब जागे का जूनी, हम चदरा तानि के सूति गइलीं । लेईं, एह परिघटना-प्रसंग का बाबत, ई एगो तुकबंदी सेवा में हाजिर बा-

उमिर तन तरंग में
मौसमी उमंग में
फागुन चइत लिखलीं
नसा चढ़ल भंग में
देखि भउजी के पड़ोस
खोवलीं हवास-होस
कुछ फूहर बकि उठलीं
मौसमी बसंत दोस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्यादा पहिले लिखलीं
थोरकी एधिरो जोड़लीं
गदह का पचीसी में
माह बारहो गढ़लीं
मित्रन मनौती में
बहु-बहुत कहौती में
लिखल सन तिहत्तर कऽ
छपल अब बुढ़ौती में
कइसन लागल रउवा
कीलो आधा पउवा
पीसीं पकईं खाईं
घुन बराइके जउवा

एह पाण्डुलिपि के पुस्तक क रूप देबे क सौ प्रतिशत श्रेय, सुदर्शन व्यक्तित्व क धनी, नखशिख साहित्यकार, भाई भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के बा । हम आपका प्रति बहुत-बहुत अभारी बानी । एह संदर्भ में प्रिय भाई डॉ. राजेन्द्र भारती जी का मदद के भी भुलाइल ना जा सकेला ।

इहाँ क सदा सहयोगी सुभाव का प्रति त हम हरदमे कायल-कृतज्ञ रहलीं, आ ऊ अजुवो बानी । एह अनगढ़ पोथी, जेवना का पाछे कुछ हिन्दी कवितन क भी पोंछि लागि गइल बा, के प्रसन्नता पूर्वक प्रकाशित करे वाला परमादरणीय भोजपुरी के गौरव-स्तम्भ पाण्डेय कपिल जी, आ एकरा बारे में आपन कीमती भूमिका के नेह-छोह देबे वाला हिन्दी भोजपुरिया विद्वान डॉ. जनार्दन राय का प्रति भी हम आभार प्रगट कस्त बानी । आखिर में डॉ. विवेकी राय जी, डॉ. मान्धाता जी, डॉ. नर्बदेश्वर जी, डॉ. द्वारिका नाथ जी, डॉ. विजय नारायण, डॉ. राम ललक यादव भाई शेष नाथ जी एडवोकेट आ भाई दयाराम जी आदि का प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापन, आपन फर्ज समझत बानी, जे गाहे-ब-गाहे, परोक्ष-अपरोक्ष, हमरो के कुछ नया लिखे खातिर अब तक लेलकारत रहल बा । मनगर छपाई खातिर मुद्रक प्रिय भाई राजीव कुमार जी के हम साधुवाद देत बानी । 'फागुन भर हमसे मति बोलऽ' शीर्षक पोथी क प्रकाशन, हमरो खातिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी का लेखकीय संसार क नागरिकता मिलला नीयन बा । भोजपुरी क हमहूँ एगो छोट-मोट साहित्यकार बानी, एह सुखद परिकल्पना का एहसास से मन मगन, हियरा लहालोट बा ।

आप सब क नेह भरल आशीर्वाद क भुखाइल-

-रामबदन राय

गाँव घर- जोगा मुसाहिब, गाजीपुर (उ.प्र.)
पिन कोड-233233
(करीमुद्दीन पुर रे. स्टेशन से 4 कि.मीटर दक्खिन)
फमी (फटपट मिलन) 09721280102

शहर क घर- 'कृष्नायन', चंदन नगर, गाजीपुर
(मऊ वाला प्रा. बस स्टैण्ड से सटल
-आवास विकास कालोनी' का बगल में,
जहाँ हमार छोटका पुत्र टुनमुन राय हमेसा रहेलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का-कहवाँ

एक : भइया जो **चइत** ना आई- कटिया पर बिनियाँ एलनियाँ / छैला काटे गोरिया कगरी / जस अँइजन चले मोकामा में / कहिं होरहा-हाबुस धुवाँ उठल / केहु सिर दबावे सइयाँ कऽ/ खस्टहिया चोली ना चली / आवऽ देखऽ नउमी मेला / भइया जो चइत ना आई 27-37

दू : बीतल चइत **बइसाख** चलल- नचते गोड़िनियाँ आ चमकल / बा जोड़ बतावऽ सच्च-सच्च / छबि राम बदन कबि का कहिहें 38-42

तीन : सब हेठ **जेठ** इ सबका से- सजना से सजनी रूसि गइल / ई राम मड़इया बंगला हऽ / ले आइल बाछा अलबेला / हे जेठ सकलि मति देखलावऽ / जेठवा कहत बा खरी-खरी 43-49

चार : आवऽ **असाढ़** बइठऽ असाढ़- कुकुरा हाँफे जिभि लपलपाय/ पवनी में जइसे बा नउवा / सोन्हीं-सोन्ही महक उठल / पल भर में बदलि गइलि दुनियाँ / बीजू कलमी दसहरी चउसा / हइ जामुनियाँ त हद चूवे / केहू अमवटवा मँगले बा / हउ के आवत कजरी गावत 50-59

पाँच : जग तन मन भावन **सावन** हऽ- केहु कजरी लइया टेरि रहल/ राधा नाचे काँधा नाचे / भउजी-सइयाँ बइठक मारे / झुलुवा उड़ि असमाने पहुँचल / जेकर साजनवाँ ना आइल / तइयार करू रे पलटनियाँ / केकर हियरा ना हुलसे ला / सावन से बढ़ि सावन सोमार/ धोवाइ गइल हर गली खोरि / कर फारि करे सावन गुहार 60-71

छौ : भइँसा लेखा **भादो** आइल- अस भादो भइली भदवरिया / अचके आइलि जन्मष्टमियाँ / का सुन्दर झलमल झाँकी बा/ आल्हा ऊठल ढोलक बोलल 72-76

सात : आइल **कुवार** कइलसि उवार- हम हर जोतला क मुँह मारीं/ तबले दसहरवा नगिचाइल / लीला क लगल रेवारी बा / घोड़ा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खरिदाइल झबलू का / रावन कुँभकरन फुँकाइ गइल / बेजोड़ सरद उजियरिया बा 77-87

आठ : जिनिगी किसान क **कातिक** हऽ- चाकी कोंहार भइल सबही/ सबकर खेतवा बोवाइ गइल / लक्ष्मी साथे गणेस पूजा/ गहगह गलिया हर खोरिया बा/ केहू हारल केहू जीतल / सुपवा-सोपारी आइ गइल / गोधन कूटे क बारी बा / छठिया आइलि बिहारे से/ आगे अक्षय नउमी आइल / बलिया क ददरी-का कहल ! / कइसे टनटन बोलत रहुए / कातिक किसान क कर्म भूँइ 88-101

नौ : किन किन कंगना **अगहन** से जिद-कसहूँ सलिया ठरकाइ चहल/ महिया बा गरम लवाही लऽ / भरि राति पिंड़ियवा अगोराइल / मिठकी ढूँढ़ी ले खाय बलम 102-106

दस : पापी **पुसवा** आ खड़ा भइल- बाबा बनरा वाली कहऽ / रामा हो कइसे कटी जाड़ि / बड़का कउड़ा बाटे लहकल / दिखे पतंगा रंग-बिरंगा/ ओकर बतिए कुछ दीगर बा/ 107-113

इगारह : पुसवो क बाप भइल **मघवा**- धीरहिं-धीरे नेवान आइल / जै-जै हो माई सुरसतिया / बेमतलब हल्ला-चिकार / अजबे खिचड़ी तिहवरवा बा / खा मजदुरवा अफसर आला / दिन गइल माघ उन्तिस बाकी 114-120

बारह : ए बाबा रे **फागुन** आइल-बुढ़िया भी करति ठिठोली बा / केहु आँखि मारि के मुसुकाइल / मन लहालोट सिवरतिया बा/ आईं फागुन से प्यार करीं / फागुन गुँझिया खाके जइहऽ 121-126

तेरह : अब **तेरहवाँ** संवाद सुनींऽ- बा सियरा-रंग बदलले बा / साधु बनाम सवाधु उवाच / जट्टीं मलकिन मेहरारुन के / बुझक्कड़ उवाच / कहाँ अजब ई कहाँ गजब ई/ आ अन्त में एगो हिन्दी कविता-चलो किसी गाँव चलें 127-135

चौदह : कुछ अन्य मौसमी कविताएँ- पूरब का गर्व-राखी का पर्व / कजरी लइया दइया नहिं भाए/ सखी शरद आए / चइत का होड़ में केहु न आवे / दीप जलाएँ / सावन क सोमार क कजरी / कहिं चोरी-चोरी कतहीं बरजोरी/ चइत क चइता 136-144

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फागुन भर हमसे मति बोलऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइया जो चइत ना आई

भँगिया पी के भँगुवाइल बा
तड़िया पी के तड़ियाइल बा
के आइल ई गाँजा पी के
बनि के बसंत बउराइल बा

फागुन का घरे आ धमकल
पाहुन बनि चइत आ चमकल
दमकल सरेहि सोना नीयन
अमवाँ मउरल महुआ महकल

कहिं मनिहारिन कहिं चुरिहारिन
कूँवन पोखरन पर पनिहारिन
खेतन में कटिया क बहार
बनिहार कहीं कहिं बनिहारिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कटिया पर बिनियाँ एलनियाँ

रहिमा रमुवाँ रनियाँ धनियाँ.
कहिं अधघूँघट वाली कनियाँ
नाना ननियाँ कच बचकनियाँ
कटिया पर बिनियाँ एलनियाँ

कहिं किहाँ- किहाँइल जनमतुआ
चाटे न कसहुँ लबरी-सतुआ
चट पिल्ला देखि चुपाय गइल
रमुवाँ बोलल अतुआ-अतुआ

फिर पीये लागल ले छतिया
मत बोल जोर क रे बतिया
दिहलस सुताय पाँजा बिछाय
चचिया करे लागल कटिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छैला काटे गोरिया कगरी

कहिं रहिला कट्टे खच्च-खच्च
उपरत बा मटर घस्स-घस्स
पच-पच सुरती थूके केहू
केहु बोझा बान्हे हच्च-हच्च

खच-खच कट्टे लागल रहरी
छैला काटे गोरिया कगरी
हट्टीं न सटीं देहियाँ रगरीं
कब परि जाई केकर नजरी

केहु सइहारे लागल चुनरी
केहु बान्हत बा ललकी पगरी
कपरा केहु का बोझा उट्ठे
केहु बिने लगल डाँड़ा-डहरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जस अइँजन चले मोकामा में

कहिं लतरी मसुरी चाना बा
गोहूँ काटऽ मनमाना बा
सिर बोझ दिवानी का पीछे
काँवर लिहले दीवाना बा
सिर बोझा गरमी घामा में
गोरिया दुलके दोगामा में
हचके कुल्हा दायाँ-बायाँ
जस अँइजन चले मोकामा में

कर बायाँ बोझा के छावे
दायाँ आगे पीछे धावे
कुच कसनी में से उचक-उचक
ऊपर दलके नीचे आवे
आगे पाछे पग थमक-थमक
पायल बाजे झन झनक-झनक
मुर्दा मनई भी उठि जागे
सुनिके चूरी खन खनक-खनक

पतरी कऽमरिया लचर-लचर
पाछे काँवरिया मचर-मचर
सब लसर-पसर लहँगा लुंगी
अस भइल पसेना तर्र-बतर
ए स्वेद बुँदकिया भालन पर
बालन क सट्टल गालन पर
सगरो संसार निछावर बा
कोमल पउँवन का छालन पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहिं होरहा-हाबुस धुवाँ उठल

कहिं रहिला मटर घनर-घनर
संग लतरी मसुरी झनर-झनर
चनचन चनके सरसों तीसी
जौ गोहूँ बलिया सनर-सनर
कहिं ताल-खाल बा फफनत बा
कहिं जल्दी धीरे पाकत बा
कहिं होरहा बा कहिं कचरी बा
कहिं कटनिहार बिन झऽरत बा
दिन भर कटिया अँटिया बिनियाँ
लागल थकनी पीलऽ पनियाँ
तिजहरिया रोवे कोरइलवा
चुप हो जा बुचिया बबुनियाँ
कहिं होरहा हाबुस छुँआ उठल
उलटल पलटल फूँकल फटकल
कूटल केहु नुन मरिचा लहसुन
सब गोलियाइल खाए बइठल
चुल्हिया बऽरल सँझली जुनियाँ
लिटिया सेंके लागल धनियाँ
मुनियाँ चोटा ले आउ तनी
कहिं पजरे बाटे दोकनियाँ

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहु सिर दबावे सइयाँ कऽ

कहिं पाँजा लबिदा धम्म-धम्म
कहिं सोटन बोझा हन्न-हन्न
उचिलावत ओसावत बोले
फटकत में चुरिया खन्न-खन्न
हो गइल किचाइन काँव-काँव
का लरिका छेहर चाँव-चाँव
सगरो लागत मनसायन बा
कहिं हाँव-हाँव कहिं झाँव-झाँव
दिन भर क लागल थऽकनियाँ
केहु झपकावे लागल निनियाँ
केहु सोरठी भार बिजैमल कऽ
गावे दरदीली कऽहनियाँ
केहु सीर दबावे सइयाँ कऽ
केहु पाँव दबावे मइया कऽ
दइया घड़नक्का ले केहू
सूतल खलल बा भइया कऽ
चहुँ निनियाँ जादू घोर गइल
अचके में तब ले भोर भइल
केहु पुवरा-जेंवरि ले भाँजे
खा पीय भागऽ सोर भइल

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खस्टहिया चोली ना चली

घरवा लीपाई चइते में
नवराति-ओझाई चइते में
जेकरा बल बा ओकरा पहिले
डँठवो दँवाई चइते में
चइता गऽवाई चइते में
नउमी पूजाई चइते में
घर-घर में राम जनम लीहें
तब डोल धराई चइते में
अमवाँ मउरेला चइते में
गुलबो फूलेला चइते में
सँइया से धनियाँ कहे लाल
चुनरी रँगवा दऽ चइते में
कंगना ले आवऽ चइते में
लहँगा ले आवऽ चइते में
खस्टहिया चोली ना चली
महँगा ले आवऽ चइते में
दिन-दिन हावा हहकार भइल
गत-गत रतिया चहकार भइल
अबहीं त चइत बइठले बा
तबले निबिया पतझार भइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवऽ देखऽ नउमी मेला

आवऽ देखऽ नउमी मेला
जहँ किसिम-किसिम क बा खेला
बइस्कोप सिनेमा जादू घर
हे रामा चइता चहकेला

कहिं छैला चिकनिया मुछमुंडा
कहिं बैल बुढ़ंठा मुँहकुंडा
चइता बहार बीचे नाचे
कहिं झुंड-झुंड क लउंडा

हइ गुड़िया क बेवहार सुनऽ
हइ पुड़िया चूहा मार सुनऽ
लाटरी टिकट मंजन साबुन
बा बीड़ी क परचार सुनऽ

कहिं लस्सी लिम्का कोला बा
कहिं कुरसी खाट खटोला बा
तम्मू में माइक पर हँकड़त
कवनो नेता मुँह बोला बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखऽ बनरा ससुरार चलल
सिर टोपी झिगुली डाल बढ़ल
दूनो हाथे कान्हीं सोटा
तरनात तनी इठलात चलल

अचके में बनरी आइ गइल
आ बनरा पर खिसियाइ गइल
खों-खों झउरा डम डम डमरू
ठन-ठन पइसा बटुराय गइल

कहिं छूरा पेट खोभाय गइल
केहु देखि डेराय पराय गइल
जादू क जोर इहाँ देखऽ
मुर्दा उठिके तरनाय गइल

केहु क पाकीट मराय गइल
केहु क लइका हेराय गइल
कहिं गर्द उठल हल्ला मच्चल
भागऽ हाथी बउराय गइल

केहु रोवे आ मोर भाई हो
गर में गरवा लपिटाई हो
चुप होखऽ बस बइसखवें में
केहु ले आवे तोहें जाई हो

केहु अँखिये से बतियावता
केहु केहु के धकियावता
केहु एक नजर खातिर कब से
सगरो मेला दउरावता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहिं चिमटा करछुल तावा लऽ
खटमल मारे क दावा लऽ
पइसा नइखे त धाम धूरि
सन-सन पछिवाँ क हावा लऽ

लागल श्रीफल क ढेरी बा
चिनिया बदाम क फेरी बा
कहिं बिरहा क झझकार सुनऽ
कहिं रहबन्ना क टेरी बा

कहिं ऊखि नेवरवा पुनपुनियाँ
कहिं चिरई देखऽ ललमुनियाँ
मेला-घुमनी पोथी बेंचे
केहु गा-बजाइ के हरमुनियाँ

कहिं कठघोड़वा कहिं चरखी बा
कहिं हवा-मिठाई बरफी बा
कहिं मथबन्हना चूरी कंगना
कहिं पइसा बा कहिं कड़खी बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइया जो चइत ना आई

भइया जो चइत ना आई
दुनियाँ दाना बिन मरि जाई
माई अनपूर्ना क सिंगार
महिमा केहू केतना गाई

चइत सइयाँ गुरु-गोसइयाँ
हम रोज परीं रउरी पइयाँ
बस नेह-छोह एतना राखी
आइल करीं हमरी गइयाँ

अन-धन से भरल रहे बखरी
तन-मन में खुसी रहे सगरी
बारहो महीना गाँव-गली
बरसे मस्ती होरी कजरी

होखे कृष्नायन रामायन
बहु भाँति भजन गीता गायन
निरगुन संतउ कहँरवा कहिं
हर घर दुवार हो मनसायन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीतल चइत बइसाख चलल

बीतल चइत बइसाख चलल
अब कुछ गरमी क साख बढ़ल
गमछा बेना बिजुली-पंखा
मलमल खादी उद्‌धी निकलल

महकत महुवा क बारी बा
चू-चू के परल पथारी बा
केहु लपटि झपटि के बीनता
कहिं बिनला बिन खैकारी बा

मस्ती में आइ गइल पछुवाँ
केतने क काम गइल अगुवा
केतने क दँवरी धरियावन
होखे लागल हहुवा-हहुवा

अँखिया गर्दा नकिया पर्दा
पर्दा भीतर ढूकल गर्दा
थकबक जूझल बाड़न सगरो
लरिका छेहर मेहरि मर्दा

केहु क गल्ला तउलाइ गइल
केहु घर-बखार ले जाइ धइल
केहु क भुसहुल भऽराइ गइल
केहु खरिहनवें बेचाइ गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नचते गोड़िनियाँ आ चमकल

अचके सतुअनियाँ आ धमकल
नचते गोड़िनियाँ आ चमकल
जीजी जल्दी जौ रहिला दऽ
कबसे भरसइयाँ बा जरल

भरसइयाँ बोले भड़र-भड़र
संग दबिला चऽले खसर-खसर
बिटिया जवान बुढ़िया देवान
माफिक मसीन मुँह चपर-चपर

कहिं दरदीली जँतसार भइल
केहु सतुआ मिलिया टार गइल
पट पीसाइल चट चऽलाइल
कसहुँ सतुआ तइयार भइल

सतुआन परल असनान चलल
केहु ध्यान धरल केहु दान दिहल
शंकर-गउरा तुलसी चौरा
केहु चण्डी सत्ती थान चलल

केहु कासी जाय बुढ़ौती में
केहू घर गंग-कठौती में
जे अजुवो नाहिं नहान कइल
ओकर ना दोष बपौती में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहु अरियें मारल डभ्भ-डभ्भ
केहु गहिरे मारल गभ्भ-गभ्भ
डुबकी पर डुबकी लागि रहल
केहु पँवरे लागल छभ्भ-छभ्भ

भिनसहरे से लागल रेला
हर घाट-घाट ठेलम-ठेला
नगरी डगरी का गाँव गली
देहला लेहला क बा मेला

बबुनी जा सतुआ ले आवऽ
बबुवा जल्दी-जल्दी धावऽ
ले आवऽ बुढ़वा पाँड़े के
गुड़ घी सतुआ जा मिजवावऽ

नन्हवा माँगे बम्हना माँगे
परजा पवनी भँटवा माँगे
डोमवा घर-घर चिचिया चिचिया
नाचे मलिकाइन का आगे

जे पावल बहुते अगराइल
जे बाँटल ओकर दुनियाइल
पइयाँ परीं ओकरा जेकरा
मन ई परब पहिले आइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा जोड़ बतावऽ सच्च-सच्च ?

कहिं इमली आम-टिकोरा बा
सतुआ लबरी भरि खोरा बा
बा रंग-रंग चिखना अँचार
लऽ खालऽ आजु निहोरा बा
का बनल तुरन्ता घोर घार !
का सीतल बुकनी जेवनार !!
चभकऽ गुड़ सतुआ घीव डालि
कहँवा अइसन आई सुतार !!!

चटनी पीसाइल चट्ट-पट्ट
सतुआ क पिण्डी गट्ट-गट्ट
अँटके न कहीं नरेटी में
तनि पानी पी लऽ घट्ट-घट्ट
काटऽ पियजुआ कच्च-कच्च
संग मरिचो ले लऽ खच्च-खच्च
सतरंगी सतुआ चटनी कऽ
बा जोड़ बतावऽ सच्च-सच्च ?

जे सतुआ मकुनी ना काटल
संग चौचक चोखा ना चाखल
भइया हो जनम अकारथ हऽ
जे महिया सतुआ ना चाटल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छबि राम बदन कवि का कहिहें ?

अइसे त सकल माह होला
ढेर बइसखवे बियाह होला
तम्मू कनात माँड़ो कोहबर
घर-घर में मन उछाह होला

बइसाख बहुत बा मन सायन
बिरहा लोरकी कहिं रामायन
तिल्लक बियाह गवना दोंगा
गऽइल पाहुर आइल बायन

बइसाख साख केतना कऽहीं
जेतना कऽहीं थोरही कऽहीं
छबि राम बदन कवि का कहिहें
रउरा समझीं मनहीं-मनहीं

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब हेठ जेठ इ सबका से

मन मरमरात तन जरजरात
हर अंग पसेना तरतरात
धूकत धधकत लिहले लुकार
ई के आवत बा हरहरात
घर बइसाखे छापा पऽरल
दिन-दुपहरिया डाँका पऽरल
उसिनाय उठल केकड़ा मछरी
मगरन का घर फाँका पऽरल

बइसाख राज कइ तहस-नहस
सुखवा दिहलस जे रहल सरस
बेहाया कऽ हाया छूटल
ईहो मुरुझाइल पाइ परस
खड़ी पर खाँटी ठेठ भइल
गर्मी भर सबकर मेठ भइल
सब हेठ जेठ इ सबका ले
बा सालि भर पर भेंट भइल

निदई मुदई जेठवा आइल
जे के तकलस मुँह झउँसाइल
अउँसाइल गोड़वा पनही में
रोवाँ-रोवाँ तन तौंकाइल
चिलकत दुपहरिया चन्न-चन्न
पउँवा जरत बा छन्न-छन्न
हेरलो पर केहू ना लउके
सगरो सीवनियाँ झन्न-झन्न

पकवा जऽरेला हाइँ-हाइँ
घरवा कऽरेला भाइँ-भाइँ
सब माटी मड़इ में भागे
कोरइलवा कऽरे काइँ-काइँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सजना से सजनी रूसि गइल

सब ताल-तलइया सूखि गइल
सजना से सजनी रूसि गइल
ले चल मंसूरी अब हमके
पूरुब से मनवाँ टूटि गइल

चकचक खड़खड़िया दुपहरिया
धकधक धूकति बा लूवरिया
देखऽ ना दुखना के डकडक
कहिं मारत होइ मऽछरिया

असहीं जनिहऽ पिछली सलिया
घूमे डक डक गलिया गलिया
कवनो गति बाकी ना रहल
बेमार परल जब रमकलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई राम मड़इया बँगला हऽ

सउँसे दुपहरिया कट्टे ना
केहु मड़ई में से हट्टे ना
कहिं तास चलल कहिं उपन्यास
सब दूर-दूर केहु सट्टे ना

ई राम मड़इया बँगला हऽ
के धन्निक ह के कँगला हऽ
सबकर आसन डासन भऽइल
ना खिड़की हऽ ना जँगला हऽ

केहु सुरती ठोंके चट्ट चट्ट
केहु बीड़ी खींचे सट्ट सट्ट
केहु हुक्का ले केहु गाँजा ले
उगिलत बा धूआँ भक्क भक्क

केहु पगहा लेइके भाँजि रहल
केहु लमहर-लमहर गाँजि रहल
केहु पहिरि बियहुती पियरी के
ए घर से ओ घर आँजि रहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहु सरबत पीये घट् घट्ट
केहु गूर पटउरा कट कट्ट
बछवा बछियन के देर भइल
केहु पानि पियावे चट पट्ट

कहिं गोड़ाई कहिं नीराई
जेठुई तरकारी सींचाई
कोड़ाइ उखिया जेठवे में
तन गतरे-गत्तर चीराई

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ले आइल बाछा अलबेला

देखऽ दऽसहरा कऽमेला
अदमी चौवा रेलम-रेला
घरभरना भइँसि बेंचि-बाँचि
ले आइल बाछा अलबेला

गोबारी चललन गइया के
सँगवा में सँवरु भइया ले
फेंटा में कऽ रुपया काटल
भइया निरदइया चइया के

केहु सुखले गुर सतुआ फाँके
केहु चमचम रसगुल्ला काटे
केहु गंगा के पियरी चढ़ाइ
डभ-भड गोता मारत बाटे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हे जेठ सकलि मति देखलावऽ

मूवा दसहरवा का आइल
हमरो हरवहवा भागि गइल
आई असाढ़ अब का होई
टेकटर क भाड़ा आगि भइल

खर्री-खुद्दी तऽ आवति बा
बाकिर हरियर ना पावति बा
भोरवाँ जो गइया लागि गइल
सँझिया खाँ टाँगि उठावति बा

हे जेठ सकलि मति देखलावऽ
हमरा तू तनिको ना भावऽ
फहरावऽ जा झण्डा पच्छिवँ
पुरुबन गरिबन में मति आवऽ

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेठवा कहत बा खरी-खरी

जइसन हमार दुपहरिया बा
भादो क राति अन्हरिया बा
तोहरा खातिर त पुसवो कऽ
दुखदाई सीत लहरिया बा

हम तऽइलाँ तोहरा खातिर
हम जऽरीलाँ सबका खातिर
बाकिर कइसे समझाईं इ
हम मऽरीलाँ दुनियाँ खातिर

बोलऽ जेठवा जो ना जऽरी
का बरसतिया पानी पऽरी ?
हऽरी के दुखवा दुनियाँ कऽ ?
जेठवा कहत बा खरी-खरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवऽ असाढ़ बइठऽ असाढ़

कसहूँ कट्टल जेठवा पहाड़
जेठवा जाते आ भइल खाढ़
जेही देखल अगराइ कहल
आवऽ असाढ़ बइठऽ असाढ़

सुरुज पहिरे कुरता-सदरी
घमवाँ उपरा छउलस बदरी
बा आँखि मिचौनी धूप-छाँव
हर गाँव गली नगरी डगरी

मेलवन में जइसे ददरी बा
कुरुता पर सुग्घर सदरी बा
जइसन जेठवा क भिनसहरा
ओइसन असाढ़ क बदरी बा

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुकुरा हाँफे जिभि लपलपाय

पहिली बुनियाँ अस लागि उठल
धरती से धधकलि आगि उठल
अस हउल भइल सगरो दुनियाँ
जस ले लुआठि केहु दागि उठल
रचिको रऽइनियाँ डोले ना
पट बंद हवा केहु खोले ना
ऊमस से अइसन हाल भइल
भर मुँह केहु केहु से बोले ना
का भइँसा भइँस बैल गाय
कुकुरा हाँफे जिभि लपलपाय
कहँवा परायँ सब हाय-हाय
ऊमस अइसन दिहलस सताय
मन गाँवा-गायीं अउँजाइल
तन आँवा लेखा औंटाइल
अगियाइल तावा छन्न-छन्न
जल परते धरती छौंकाइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवनी में जइसे बा नउवा

दिनवाँ पुरवइया सनर-सनर
रतिया मसहउवा भनर-भनर
अइंकस मइंकस लरकोरिया संग
अकुलाइल लरिका कनर-मनर
पवनी में जइसे बा नउवा
पच्छिन बीचे उरुवा कउवा
बाजा हुरुक मनई तुरुक
ओइसे हउवा में इ पुरुवा

पछवाँ पिठिया ठंढाइ गइल
अगवाँ पेटवा गरमाइ गइल
कबले बेना पंखी चऽली
बुजरी बिजुली बूताइ गइल
जब आन्ही पानी आवेला
चीरइया ढोल बजावेला
हड़हड़ गड़गड़ बदरा कइके
बद बद बुन्नी बरसावेला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोन्ही सोन्ही महक उठल

कहिं उमड़ घुमड़ के बरिस उठल
कहिं बाग-बगइचा लहक उठल
अजबे सुबास धरती देहियाँ
कहिं सोन्ही-सोन्ही महक उठल

कहिं नन्हमुनियाँ भिंस फुस बुनियाँ
चुइ गइली कतहीं ओरियनियाँ
कहिं टक पर ढक गोटी जमकल
बिच रुनियाँ झुनियाँ चनमुनियाँ

कहिं टपर-टपर कहिं छहर-छहर
कहिं थोरे बा कहिं बा भरदर
कहिं कान्ही हर हाथे पैना
बैलन का पीछे डहर-डहर

भीतर बाहर अंगना कोठवा
लूडो कतहीं बारह गोटवा
केहु गोली धवरी सोकनी के
गोहरावे हाँके ले सोटवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पल भर में बदलि गइल दुनियाँ

बैलन क खुरिया खटर-पटर
गर घुघुर-घाँटी घनर-घनर
पीछे किसान लाठी लिहले
चल बढ़ जा बाबू डहर-डहर

पल भर में बदल गइल दुनियाँ
चालू होइ गइल कीसनियाँ
कहिं खाद पड़े केहु घास गढ़े
केहु करे लगल सनियाँ पनियाँ

हरवा खेतवा में चले लगल
तन जरे पसीना बहे लगल
गोबर पानी निपटा केहू
चट पनपियाव ले के पहुँचल

तेरह कातिक तीनी असाढ़
जोतऽ फाँड़हिया ठाढ़-खाढ़
खेतवा सोमरा तिखरा कइके
चाँचर दुबिया के दऽ ओखाढ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहु ले सावाँ छीटे निकलल
केहु कहीं खेत सींचे निकलल
जहाँ पानी भइल मजे क बा
तहाँ बीया धान परे निकलल

कहिं जोन्हरी खेत छिटाय रहल
कहिं मकई खेत बोआय रहल
कहिं दूइ चास कहिं चार चास
बजरा क खेत जोताय रहल

कहिं बस्ता कान्हीं में लटकल
ले बगली में दाना निकलल
मरकी परे ई इस्कुलवा
जब काम बढ़ल ईहो खूलल

छोटुआ का छाता खरिदाइल
बड़का का बरसाती आइल
कापी किताब दावात कलम
केतने का झोरवो कीनाइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीजू कलमी दसहरी चउसा

बगियन में आइल अमवाँ बा
ईहो अगोरल कमवाँ बा
पलखत परलऽ कि लूटि मचल
आइल नाकी में दमवाँ बा

दिन में बाड़न लइका-फइका
भरि राति अगोरसु मुसइ चा
मड़इ मेटा लोटा सोटा
पतइ क गुदगर गऽलइचा

कहिं थोर-थार टीकोरा बा
अँठिली वाला चहुँओरा बा
भूँजऽ अमवाँ पीय पन्ना
टाँगल सतुआ क झोरा बा

बीजू कलमी दसरी चँउसा
कवनो खटका कवनो मिठका
लँगड़ा फजली केतने नमवाँ
छोटका बड़का गोलका लमका

हइ पाकल बाकिर हरियर बा
हइ काँचे बाकिर पीयर बा
हइ सक्ख-मक्ख श्रीफल अइसन
ढेंपिया पर सेनुर नीयर बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हइ जामुनियाँ तऽ हद चूवे

छोटका अमवाँ टप-टप चूवे
मझिला अमवाँ बद-बद चूवे
बड़का चूवत बा गद्द-गद्द
हइ जामुनियाँ तऽ हद चूवे

लऽ गोपी चूसऽ रसगर बा
हेके फारऽ इ गुदगर बा
हइ अँटके रेसवा दँतवन में
मोटका बोकला अँऽठिलगर बा

तनकी भर का हावा बहल
कि सगरो बा धावा परल
डाली खाँची बोरी जलखरि
ले लइका छेहर बा दउरल

कहिं खटमिठवा अँऽचार परल
कहिं गाद गराइल थार भरल
कहिं डालि अमावट खटियन पर
अँगना छतवा पऽथार परल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू अमवटवा मँगले बा

सोरियन डढ़ियन चिउँटा मटवा
फरवन पर भनर-भनर हड़वा
नवकी गँछियन के रतिया में
आ-आ झोलियावत बा पड़वा

कतहीं अमवाँ तोराइ रहल
बीनाइ रहल बिटुराइ रहल
जहँवा नइखे, संगी-साथी
हितई-गन्हई में जाइ रहल

केहु चूसि रहल केहु चाटि रहल
केहु नाकि डुबा के काटि रहल
केहु छाँटि रहल नीमन बाउर
केहु टोल-परोसा बाँटि रहल

केहू अमवटवा मँगले बा
केहु खऽटइया के कहले बा
फलवन क राजा अमवाँ ह
खालऽ ना तऽ उजहले बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हउ के आवत कजरी गावत

हइ अमवाँ सावन भर चऽली
हइ भादो में पाकी मीली
हइ मिठका पाके ना पाई
काँचे पर सुग्गा खा धऽली

हइ अमवाँ बारह मासी हऽ
हेके चीखऽ कोंपलासी हऽ
हइ खटका ह माहुर नीयन
खइलऽ कि जिउवा फाँसी हऽ

ई तऽ असाढ़ कऽ हालि रहल
बेहालि रहल खुसहालि रहल
हउ के आवत कजरी गावत
निबिया पर झुलुवा डालि रहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जग तन मन भावन सावन हऽ

ई के आली मन भावन हऽ
जियरा कऽ प्यास बुझावन हऽ
मरहम पट्टी हर घावन कऽ
हर हियरा कऽ सरसावन हऽ

झिंसफुस फुहार रिमझिम पानी
धरती धइलसि चूनर धानी
ई रानी हऽ कि राजन हऽ
केकर आवन बूझऽ जानी ?

एगो कहलसि सखि राजन हऽ
दूजी कहलसि सुख साजन हऽ
तीजी चउथी पचवीं कर्रा-
सावन सावन बस सावन हऽ

बहकल कजरा सखि सावन हऽ
गमकल गजरा हँऽ सावन हऽ
लहकल अँचरा खनकल चूरी
जग तन मन भावन सावन हऽ

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहु कजरी लइया टेरि रहल

सावन क काजर करखहवा
जस भादो भइँसा मरखहवा
केतने घायल गिरि-गिरि पथार
केतने डरि भइले सरकहवा

केहु कजरी गइया फेरि रहल
केहु कजरी लइया टेरि रहल
केहु कजरी राति आँखि कजरी
कजरी सखिया के हेरि रहल

कहिं कजरी कासीपूरी बा
कहिं खाटी मिर्जापूरी बा
ब्रजवाली अवधी पटनहिया
कहिं देसवाली भोजपूरी बा

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS,MoE-Grant-2

राधा नाचे काँधा नाचे

कहिं ममकत साज सरँगिया बा
कुहुँकत ढोलक हरमुनियाँ बा
टुनकत टुनकी लहरत सुर में
छम छमकत पाँव नचनियाँ बा

पँखिया फारी मोरवा नाचे
सँझिया नाचे भोरवा नाचे
थपरी बजाइ किलकारी दे
बचवा माई-कोरवा नाचे

डलियन झुलवा पतिया नाचे
फुनगी झुलवा फुलवा नाचे
अलियन कलियन गलियन-गलियन
राधा नाचे काँधा नाचे

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भउजी-सइयाँ बइठक मारे

कसि हो कहिया पचैयाँ हऽ
संग पूड़ी खीर सेवैया हऽ
भउजी-सइयाँ बइठक मारे
धुरि रगरत ननदी-भइया हऽ

केहु क कछिया खरिदाय गइल
केहु दरजी घरे दियाय गइल
केहु दूध चढ़ाय पचाय रहल
केहु क बदाम रगराय गइल

कहिं चिक्का बा कहिं बरगत्ता
कहिं खेल कबड्डी जमकता
कहिं ऊढ़ा बा कहिं कुस्ती बा
केहु झपटता केहु. पटकता

ई काला जंग लगवले बा
ऊ धोबिया पाठ चढ़वले बा
सखी बहरल्ली या अल्ली
हउ साफे चित्त गिरवले बा

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झुलुवा उड़ि असमाने पहुँचल

कहिं तनवाँ सावन पुलक उठल
कहिं मनवाँ सावन हुलस उठल
झूला का संग पटेगाँ पर
मधुकंठी कलरव किलक उठल
चढ़ि झूला पर दुनियाँ घूमे
अँचरा फहरा लहरा झूमे
नागिन चोटी हिलकोरा ले
बेसुध बरवा मुँहवा चूमे
केतने खाड़ा केतने बइठल
केतने ओठगँल केतने लरकल
केतने चहकल बहकल सँहकल
झुलुवा उड़ि असमाने पहुँचल
तबले अचके डढ़िया चरकल
केहु चित्त गिरल केहु पट्ट गिरल
केहु सरक सँभल उठि खड़ा भइल
केहु केहू का उपरा छपरल
केहु हँसि-हँसि के नीहाल भइल
केहु बुलुक-बुलुक बेहाल भइल
कोहनाय चलल केहु केहू पर
झुलुवा क डालल काल भइल
आ का बछिया रोवत बाड़ू
हमरो त केहुनी लाल भइल
बचिया का अजिया का अवते
झउरा अस मचल बवाल भइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकर साजनवाँ ना आइल

भूला टूटल कजरी छूटल
ठंडी बयार तन काँपि उठल
बिन पिया पपीहा पीक पीर
कोइलि कूकलि हिय हाँफि उठल

जेकर साजनवाँ ना आइल
ओकर सावनवाँ का आइल
केहु साजनवाँ त घरहीं बा
बाकिर दुसरा पर लूभाइल

केहु लुलुआइल केहु छछनाइल
केहु अपच भइल एतना खाइल
केहु थोरही खा के छोड़ि दिहल
केहु कहिए से बा बे खाइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तइयार करू रे पलटनियाँ

आइल मंगल सुभ सुखरासी
राखी क दिन पूरनमासी
का नगर डगर हर गाँव गली
खोजले ना लउके ऊदासी
हथवा थरिया हियवा दुलार
मुँह मीठाई रोरी लिलार
कच्चा धागा से बन्हा रहल
भइया बहिनी क अमिट प्यार

मोर भइया जीयसु लाख बरिस
बल बढ़े बहादुर भीम सरिस
बिद्या बुद्धी बेजोड़ बढ़े
ऊँचा ओहदा बड़की सरबिस
कतहीं से राखी आइ रहल
कतहीं से राखी जाइ रहल
केतने बम्हना राखी ले ले
ए घर से ओ घर धाइ रहल

केहु लड्डू पेड़ा बना रहल
कतहीं दलपुरिया छना रहल
केहु पहिरि-खाइ केहु नाचि गाइ
राखी तिहवार मनाइ रहल
सुनि बिपति मेवाड़ी बऽहिनियाँ
उड़ि गइल हुमायूँ क निनियाँ
राखी क लाज, आज अबहीं
तइयार करू रे पलटनियाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केकर हियरा ना हुलसे ला

घिर-घिर बदरी झिर-झिर फुहार
ठंडी हल्की सिर-सिर बयार
केकर हियरा ना हुलसे ला
लखि रिमझिम सावन क बहार

हरियर चूरी हरियर सारी
हरियर हियरा हर नर नारी
हरियर दिनवाँ हरियर रतिया
बतिया हरियर प्यारी-प्यारी

हरियर धनवाँ क बेहनियाँ
हरियर मनवाँ बनिहरिनियाँ
गा-गा गितिया भरि पीरितिया
खेतवन में लागल रोपनियाँ

रावल मुनियाँ दिलवर जनियाँ
सब निहुर-निहुर घट्ठी पनियाँ
बा तरह-तरह बोली बनियाँ
ननदी रोपे भउजी सँगियाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कतहीं बेहन उपराय गइल
कतहीं खेतवा रोपाय गइल
सरि गइल अँगुरियन पर पिसि-पिसि
मेहदी अँवरा छोपाय गइल

कीचड़ कादो सावन-भादो
ऊधो से हँसि कहलन माधो
गोपियन से अधिका, जो गइलऽ
तँग-व्यँग करी करइल-काँदो

छोड़ी ना अस पग लपिटाई
केहु छोड़ावे नाहीं आई
का प्रेम कहाला तोहरा के
कीचड़-करइलवे समझाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सावन से बढ़ि सावन सोमार

कस सावन बिना सुमारी कऽ
बिन सोभा सिव त्रिपुरारी कऽ
बम बोल कँवरिया जात्री बिन
सावन नारी बिन सारी कऽ

कहिं बैजनाथ कहिं बिस्वनाथ
कहिं नैपाले पसुपती नाथ
नाना नामी सिव मंदिर जहँ
तहँ पहुँचि-पहुँचि बहु झुके माथ

केहु नाचत बा केहु गावत बा
कतहीं केहु बाज बजावत बा
बा सुबह साम आरती होति
केहु जल बिलपत्र चढ़ावत बा

सावन से बढ़ि सावन सोमार
सिव क सिंगार सिव क दुलार
नाना फुलपतिया बहु भँतिया
कच बच बिजुली क बा बहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धोवाइ गइल हर गली खोरि

अस असरेसवा दिहलस रगरी
केतने कऽ हेठ भइल ममरी
रोपऽ गगरी भा दऽ चोभा
बइठे लगली बहुतो बखरी

मग्घा बरसल झकझोरि-झोरि
कीचड़ मलबा सब घोरि-घोरि
रहि गइल न खर कतवार कहीं
धोवाइ गइल हर गली खोरि

मग्घा दुइ-तिन दिन घाम उगल
बक्सा सनूखि झाँपी खूलल
अँगना खटिया सब बिछा-बिछा
साड़ी साया कपड़ा उलटल

चद्दर पहिरन चोली जंफड़
कंघी सीसा चोटी चप्पल
फोटो साजुन पंखी पउडर
खेलवाड़ अनेकन आ फइलल

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर फारि करे सावन गुहार

गड़हा गड़ही से करे प्यार
गड़ही पूछे नारा दुवार
नारा चललन नदिया घरवा
नदिया पहुँचल सागर इयार

जहँ बैरी-बैरी करत प्यार
बेरिया कँटवा केरवा इयार
का हाथ मिलाईं गले लगीं
कर फारि करे सावन गुहार

हमरा से जेके सुख भइल
कुछ अनजाने में दुख भइल
जा तानी कइके राम-राम
सब माफ करब कइल-धइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइँसा लेखा भादो आइल

माटी कानो में लपिटाइल
मातल महियाइल फोंफियाइल
डंडा लाठी बेअसर बढ़ल
भइँसा लेखा भादो आइल

करिया अँधियरिया भइल रात
करिया कोइला खा गइल मात
करिया भइँस भागल तोराय
खोजले लउके ना पात-पात

बरसतिया अस भऽइल जवान
जस थाना क बिगड़ल दिवान
गरजे बरसे चमके तड़पे
कीचड़ पानी सगरो सिवान

किच किच पिच पिच बा पाँक भइल
घुट्ठी-घुट्ठी भर हाँच भइल
कहिं भइल खडंजा टीपुर बा
कतहीं ठेहुन भर हाँच भइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस भादो भइली भदवरिया

कहिं गड़ गड़ खाली गरजऽता
कहिं उमड़ि घुमड़ि के बरसऽता
कहिं अहो दिन आ अहो राति
अउँजा देता जब झमड़ऽता

अस भादो भइली भदवरिया
लउके ना हरियर तरकरिया
आलू पियाज भी जो नइखे
तब काम चलावे अँदवरिया

जब बरखा बरसे राति दिन
तब सावाँ साठी साठि दिन
सूरुज नारायन क दरसन
दुरलभ भइल सात-आठ दिन

अस भादो ठहकल खाढ़ भइल
केतने गाँवन में बाढ़ भइल
केहु लवना बिन केहु लेहना बिन
केहु जा करइल केहु बाँड़ धइल

भादो भइँसा का बड़ा मेर
चइते बनिहरवा कवन फेर
एकरा साईं बेरका अनेर
ओकरा अनाज भइल उमेर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अचके आइल जन्मष्टमियाँ

अचके आइल जन्मष्टमियाँ
कागद आइल नाना रँगियाँ
झण्डी झालर फुलवा पतिया
ले कइँची काटे बहु गुनियाँ

केरा असोक अमवाँ निमियाँ
गल्ला भर पत्ती टऽहनियाँ
सब सजा बान्हि खम्हवन उपरा
कइ गोल बन्हाइल कऽइनियाँ

बड़का एकरंगा टँगा गइल
कान्हा जन्मोत्सव लिखा गइल
झण्डी झालर फोटो परदा
सब जगह-जगह से सजा गइल

लटकत बहुरंगी गुब्बारा
हिकमत से लागल फउवारा
चमकत बिजुली में नहा उठल
जगमग जगमग घर ओसारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का सुन्दर झलमल झाँकी बा

निक लागत कारागार बड़ा
कर लाठी पहरेदार खड़ा
बसुदेव देवकी के अन्दर
सब निरखत अँखिया गड़ा गड़ा
कालीदह नाग नथइया बा
जमुना तट चीर चुरइया बा
ग्वालन सँग कानी अँगुरी पर
कहिं गोबर्धन उठवइया बा
आ देखऽ रास रचइया के
बा नाचत ता-ता थइया के
ग्वालन ग्वालिन सँगवा सोभित
अजबे बंसी बजवइया के
का सुन्नर झलमल झाँकी बा
कान्हा क चितवनि बाँकी बा
गायक कजरी सँग हरमुनियाँ
तबला टुनुकी क टाँकी बा
बा कहिए क चिनियाँ आइल
धनियाँ भूँजाइल पीसाइल
हलुवा सिंघाड़ा कऽ बनल
खिरवा सेउवा आ धऽराइल
सोहर आरती बधइया बा
हर गाना कुँवर कन्हइया बा
लऽ भुर्रा हलुवा पंजीरी
कहिं छठिया कहीं बरहिया बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आल्हा ऊठल ढोलक बोलल

चउथि बीतलि तिजिया आइल
सब सखी-सलेहरि अगराइल
मेहदी पिसि-पिसि अलिया हथवा
कलिया फुल पतिया उरेहाइल

सखि झुंड-झुंड असनान चलल
सुमधुर कलकंठी गान उठल
नदियन पोखरन पर नहा-नहा
सब रंग-रंग कपड़ा पहिरल

मुखिया दुवार आल्हा ऊठल
लइका सेयान बुढ़वा बिटुरल
एधिर झमझम बरखा बहार
ओधिर धम-धम ढोलक बोलल

तेगा बोले खट-खट-खटाय
तलवार करे छप-छप-छपाय
रोटी तउवे पर तँवक गइल
दलिया बटलोही जरि बुताय

जल से धरती क पेट भरल
कल से भादो भयवा टसकल
पल में माहुर घमवाँ बुखार
लिहले कुवार ककवा पहुँचल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइल कुवार कइलसि उवार

आइल कुवार कइलसि उवार
सरदी जुखाम जूड़ी-बुखार
मौसम बदलल सरदी-गरमी
डक्दरवन कऽ भइल सुतार

अँखिया में चननी मरले बा
केहु के रऽतौन्ही धइले बा
केहु कहिए क खटिया पऽरल
अस लागे जिउवा गइले बा

कहिं घरहीं काढ़ा खउलता
केहु डक्दरवन ढिग दउरता
केहु चुरइनि भूत परेत समझि
ओझा सोखा के टउरता

कहिं पेट दरद कहिं सिर दरद
लइका सेयान मउगी मरद
केहु बिन पइसे क ठीक भइल
केतने का होइ गइल करज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम हर जोतला क मुँह मारीं

डिलवन हर थोर-थार निकलल
करइलवन पर नइखे निखरल
सुतरल बा धुसवन पर जेकरा
जेतना सँपरल ओतना ओखढ़ल

बिन बदरी क माहुर घमवाँ
हर हरवाही पक्का कमवाँ
दिन भर टिटिकारत हाँकत में
अगियाइ उठल देहिंया चमवाँ

धवरा उछड़त बा कूदत बा
सोकना खेतवे में सूतत बा
हरवहवा टट्टी पर टट्टी
घंटा-घंटा पर मूतत बा

दुइ दिन कमवाँ तिन दिन घरवाँ
अइसन मीलल बा हरवहवा
कहियो गऽइल बा ससुरारी
आइल कहियो बा बोखरवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहिं ताल खाल नारा निखरल
कहिं टेक्टरवा बाटे बिगरल
कहिं बिना बैल बिन हरवहवा
देखते-देखते खेतवा उखड़ल

बैला हरवा खेते पहुँचल
बाबू बाड़न घरवें बइठल
ले गइलन सतुआ तिजहरिया
देखते हरवहवा बिगड़ उठल

हम हर जोतला क मुँह मारीं
मुँहवाँ में आवति बा गारी
एकरा ले नीमन रोजदारी
भा बेचल घुमि-घुमि तरकारी

बहुते बोललऽ खिसिया-खिसिया
आखिर सुनबऽ हमरो बतिया
अंचके इनरा में माकत में
कुदि गइलि रहलि हउवे बछिया

कसहूँ हरवहवा ठंढ़ाइल
होखे लागल पीयल-खाइल
फिर मालिक क बटुआ खूलल
रगराइल सुरती ठोंकाइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तबले दसहरवा नगिचाइल

अबहीं खेतवा ना जोताइल
तबले दसहरवा नगिचाइल
कहिं बगिया में कहि परती में
सब लइका-फइका बिटुराइल

केहु बाँस काठ केहु ले रम्मा
केहु गहिरे गाड़त बा खम्मा
केहु कुरसी चढ़ि परदा बान्हे
जे निकम्मा देखे लम्मा

दिन दुपहरिए माइक आइल
फिर तार बिजुलिया खींचाइल
साँझे खा-पी देखे खातिर
लइका लइकी बहु बिटुराइल

केहु व्यास अरतिया गावत बा
सब सँगे-सँगे दोहरावत बा
केहु थरिया दीया-बाती ले
देखनहरून में देखलावत बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री राम लखन की जै बोलऽ
हनुमान ललन की जै बोलऽ
जै बोलऽ जनकनन्दिनी कऽ
तनिं जोर लगा के सब बोलऽ

बुढ़वा मालिक क नजर परल
देखलन हरवहवा के बइठल
कल्हिएँ कहलसि अब ना जाइब
बाकिर माने ना बा परिकल

ई दिन भर हरवा हाँकता
जा-जा रतिया भर ताकता
बैला का फार लगा दिहलसि
खिसिया मलिकरवा डाँटता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीला क लगल रेवारी बा

लीला क लगल रेवारी बा
नारद मुनि मोह क बारी बा
श्री राम जनम क सोहर बा
सीता बियाह क गारी बा

केहु देखे केकइ कोप भवन
बन गमन राम जानकी हरन
रावन अरु अंगद व्यंग-बान
लछुमन मुरछा घननाद मरन

आजु सतमी ह काल अटमी हऽ
परसों क दिनवाँ नउमी हऽ
हर लइका पूछे 'माइ रे
आजी हो' कहिया दसमी हऽ

दिन क मेला आ नगिचाइल
धीरे-धीरे दसमी आइल
दुइ-चार टका से का होई
पपुवा पापा पर कोहनाइल

केहु पइसा माँगे भाई से
केहु पइसा माँगे ताई से
केहु आजी से ठकठेन करे
दऽ तीस रुपइया माई से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घोड़ा खरिदाइल झबलू का

केहु गुलजामुन खा नरम-नरम
केहु चाट पकौड़ी गरम-गरम
केहु ले लड्डुआ चढ़ि चऽउतरा
माथा टेके सिय राम चरन

रुनियाँ लिहलसि ललका फीता
झुनियाँ किनलसि बड़का चीता
मुनियाँ मूरति किनलसि बइठल
हनुमान राम लछुमन सीता

बन्दूक किनाइल बबलू का
चसमा लीयाइल डबलू का
टिकलू का घुघुना खरिदाइल
घोड़ा खरिदाइल झबलू का

केहु क फूलौना फूटि गइल
केहु क खेलौना टूटि गइल
बेहाल भइल रो-रो केहू
अँगुरी चाचा क छूटि गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन ही लऽड़ाई बा जमकल
कहिं रामादल कहिं रावण दल
मुँह पहिरि मुखौटा अजब गजब
केहू लपकल केहू झपटल

केहु धनुष बान ले आँजि रहल
केहु हाथ गदा ले भाँजि रहल
कहिं रावण जै कहि सिरी राम
बा बाज जुझारू बाजि रहल

केहु अंगद बनि के अँकड़ता
केहु हनुमान बनि हँकड़ता
केहु भागऽ भागऽ सोर कइल
केहु धरऽ धरऽ पकड़ता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रावण कुँभकरन फुँकाइ गइल

देखऽ रावण पुतला गाड़ल
का बाँस खपाची बा बान्हल
बा जीभि लाल लमहर लपलप
का चमकौवा कागज साटल !

बा कुम्भकरन सउँसे पहाड़
बहिंया फइला तरनाइ खाढ़
भरसाइँ नियन मुँहवा बवले
अजबे बाटे राछछ धकाड़

हथवा में लिहले धनुष बाण
मारे खातिर श्री राम खाढ़
लागल लुकार तिरिया छूटल
धक-धक जऽरल पुतला पहाड़

बँसवा-फठवा धड़-धड़र-धड़र
गँठिया बोले पड़-पड़र-पड़र
देहिंया जऽरे बहिंया गीरे
छतिया मुड़िया सन-सनर-सनर

रावन कुम्हकरन फुँकाइ गइल
असली मेलवा ओराइ गइल
दसमी क चाँन उगल उपरा
चहुँ ओर अँजोरिया छाइ गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेजोड़ सरद उजियरिया बा

अजबे कऽ उगलि अँजोरिया बा
एकही दीया दीवरिया बा
चंचल सुहास सीतल सुबास
बड़ गजब सरद उजियरिया बा

झिर-झिर सावनी फुहरिया का
सिर-सिर फागुनी बयरिया का
मनहरिया जड़ चेतन सबकर
चाँदनी सरद उजियरिया बा

चिरई चहकन बँसवरिया का
सँग निझरिनी झर-झरिया का
हर तार छिड़ल जल तरंग का
जस पूनम राति अँजोरिया बा

खोजले ना कहीं अन्हरिया बा
कइ लाख वाट फुलथरिया बा
सरगो सोभा लखि सिहा उठल
अस पूनम राति अँजोरिया बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पायल छम छम छनकरिया का
रतिया चुरिया खनकरिया का
अनगिन सफेद बक झुंड उड़ल
ना जोड़ सरद उजियरिया बा

नन्हकन बचवन किलकरिया का
दहि भरल धवल कहँतरिया का
रति गति मति लखि बेहाल भइल
अस सुघर सरद उजियरिया बा

सजनी सोहाग सेजरिया का
खोडसी हँसी फुलझरिया का
ककवा कुवार क थाती ई
बेजोड़ सरद उजियरिया बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनिगी किसान क कातिक हऽ

कुछ कुनकुनात ठंढी आइल
कुछ गुनगुनात मस्ती आइल
कातिक किसान तन सनसनात
फुर्ती आइल चुस्ती आइल

का ताल खाल बऽनल बिगड़ल
कोला-काली छूटल छटकल
चितरा का बावगि से पहिले
जोताय चलल खेतवा कलकल

सोना बुनियाँ सोना बरसल
का कुरुइ भर दोना बरसल
उखड़ल खेतवा का बोवाई
तिसियो भर भी जोना बरसल

ऊठऽ ऊठऽ ई कातिक हऽ
बइठऽ मति भइया कातिक हऽ
जिव घातिक जिन सुतलन बच्चू
जिनगी किसान क कातिक हऽ

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाकी कोंहार भइल सबही

बखरी बखार खूले लागल
घरहीं बीया बऽने लागल
केहु बनिहरवा बोले गइल
केहु बनिहारिन घरवाँ भागल

गोहूँ रहिला फटकाइ रहल
कहीं लतरी मटर झराइ रहल
मसुरी तीसी सरसो सुपवा
पछिनाइ रहल डगराइ रहल

सँझयें बियवा जोखाइ गइल
दलिया खरिया भेंवाइ गइल
थाकल बैला ना मुँह बोरे
सतुआ पिसान छिरिकाय गइल

बाकी बा राति घरी अबहीं
चाकी कोंहार भइल सबही
बैलन उठाइ रचि के खियाइ
गोबर फेंकाय ले गोबरही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबकर खेतवा बोआइ गइल

केहु टड़िया के बन्हवाइ रहल
केहुका टेक्टरवा धाइ रहल
एधिर ओधिर बोवे खातिर
केहु चोखा मुँह बनाइ रहल

केहु बीया ले घरहीं बेलमल
केहु ले टड़िया खेतवा पहुँचल
केहु लट्ठा ले के नापि रहल
केहु पनपियाव ले के दउरल

केहु क बावगि अगुवाइ गइल
केहु क बावगि पछुवाइ गइल
छोटका बड़का दस-बिस दिन में
खेतवा सबकर बोवाइ गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लक्ष्मी साथे गणेस पूजा

तवले आइल धन तेरसिया
केहु कीनल थरिया गीलसिया
तावा तसली केहू कीनल
केहु कऽलसिया केहु सँऽड़सिया

हर नगर गाँव लक्ष्मी पूजा
जै जै मइया घर-घर गूँजा
पूजा घर में जे भी आवे
लक्ष्मी गनेस पग छू छू जा

आजु सिवजी के केहु ना पूछे
हनुमानो जी के ना पूछे
औरी त औरी चार भुजी
लक्ष्मी पति के भी ना पूछे

लक्ष्मी साथे गणेस पूजा
माने धन सँग विवेक पूजा
इच्छा सुभ कऽ हर लाभ सँगे
संदेस देस दुनियाँ गूँजा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गह गह गलिया हर खोरिया बा

अजबे दियवा-दीयारी बा
ना रंच कहीं अँधियारी बा
का गाँव-गली डेहरी मुड़ेर
जगमग जगमग उजियारी बा

दियवन क गभ्भिन कतार सजल
दुधिया बल्बन क हार टँगल
बहुरंगी कचबचिया झालर
बऽरे बुताय रफतार बन्हल

का कोठा पर परकोटा पर
तक्खा दियरक्खा ओटा पर
कोना-कानी का ओरियानी
कहि बल्ब टँगल बा सोटा पर

कहिं लइकन क किलकरिया बा
कहिं छूटि रहल फुलझरिया बा
कहिं करे पटाखा ठायँ-ठायँ
गह गह गलिया हरखोरिया बा

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू हारल केहू जीतल

दुलहिन नीयन बा राति सजल
हर नात मर्सिया भइल गजल
बा लइकन क मन लहालोट
बुढ़वन क दिल दुलहा बऽनल

देखऽ कतहीं जूआ जमकल
खाड़ा बइठल ओरमल लरकल
केहु क बाटे दउवा लवटल
केहु कऽ कब्बे से बा बरकल

कभि नव परल कभि छव परल
केहु बा हारल केहु बा जीतल
केहु उठिके आपन घर धइल
केहु भिनसहरा तक बा टीकल

अँचितले केहू चिचियाइल
भागऽ भागऽ पूलिस आइल
कउड़ी पइसा के के पूछे
सब लंक लाइ उठि पऽराइल

कर्रा मच्चल सिवजी हरलन
कुछ बनमाली भी पा गइलन
नाऊ छोटन सोखा के ले
हल्ला भऽइल भोला जितलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुपवा-सोपारी आइ गइल

दीया क तेल ओराइ गइल
बा मोम्बतियो बूताइ गइल
जल्दी लऽ कजरौटा हँसुवा
सुपवा-सोपारी आइ गइल

इस्सर पइठऽ दऽलिदर जा
लक्ष्मी माई भंडारे आ
दीया देखाइ सुपवा बजाइ
सब ए घर से ओ घर में जा

सुपवा बाजत बा फटर-फटर
अन्हराहे भऽइल खटर-पटर
घरवा-घरवा कऽ दलिदरवा
उठि-उठि के भागे फटर-पटर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोधन कूटे क बारी बा

बीतल सुपवा-सोपारी बा
गोधन कूटे क बारी बा
गोबर देहियाँ कउड़ी अँखिया
झोंटा कपरा तइयारी बा

गोधना क अजब अवाई बा
चन्नन पीढ़ा पहुनाई बा
गा-गा रिझाइ गोड़वन लघाँइ
मुसरन से गजब कुटाई बा

रँग-रँग कऽ चढ़त मिठाई बा
घुरुली बा कुटुकी लाई बा
पूरी बखीर बा मोरब्बा
खा दऽही खींचि-खवाई बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छठिया आइलि बिहारे से

लसिया पसरलि पंजाबे से
चहवा फइलल बंगाले से
रोगी अँगरेजी कऽ बढ़लन
भारत भर में मैकाले से

पटना आरे कटिहारे से
गंगा का कहीं किनारे से
बीसवीं सदी बिच एहि तरे
छठिया आइलि बिहारे से

छठिया क चर्चा मति पूछऽ
बा केतना खर्चा मति पूछऽ
डुब्बत उग्गत सूरुज बाबा
कऽ पूजा-अर्चा मति पूछऽ

माई क अजब अवाई बा
छठिया क गजब भुखाई बा
लउकी उखिया क दुखिया जे
घर-घर में घूमि मँगाई बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुच्चा घी अगरोटी पाकै
फल-फूल किनऽ मंडी जाकै
दउरी डाली खातिर केहू
चहुँ चक्कर काटे ना थाकै

बिजुली क सोभा मति पूछऽ
बा माइक-भोंभा मति पूछऽ
गायन बादन आतिस बाजी
कंतना मनसायन मति पूछऽ

नदिया पोखरा देखऽ जाकै
भिड़िया उमड़ल घाटे-घाटे
आन्हर लंगड़ बुढ़वा बुढ़िया
बंचस घर-घर बइठल बाटे

साँझे छठिया भोरे छठिया
चहुँ ओर सुना गितिया छठिया
दिन में परसाद बँटे घर-घर
केहु छूटे ना मंदिर-मठिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे अक्षय नउमी आइल

आगे अक्षय नउमी आइल
बनभोज महोत्सव नियराइल
अँवरा कऽ बिधिवत पूजा कइ
फिर सुरु भइल पकवल खाइल

केहु छूटे ना पारऽ इयाद
जे खास-खास भाई-दयाद
छोटका छोटुआ क छुटल भोज
कल्हिएँ गइल ई लहाबाद

कच्ची पक्की दऽही चिउरा
खा पूवा पाँपड़ फूलउरा
कहिं भउरी चोखा खीर बनल
केहु काटल पूड़ी गूलउरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलिया क ददरी- का कहलऽ !

आइल कातिक पूरनमासी
चलऽ बलिया छोटकी कासी
बनबावऽ असली घी पूड़ी
नरसों तक ना होई बासी

बलिया क ददरी-का कहलऽ !
मेलन क पगरी-का कहलऽ !!
घोड़हट्टा जादू-चिड़िया-घर
सरकस नवटंकी-का कहलऽ !!!

गंगा नहाइ भिरगू दरसन
खा पूड़ी ले पेड़ा चमचम
घूमऽ मेला देखऽ खेला
तिजहरिया पीयऽ चाह गरम

कहिं चदरा कमरा कीनाइल
कहिं पनही नीबू लीयाइल
केहु बैल बेंचि औने-पौने
जा भइँसि मथुरही लेआइल

रतिया बाटी चोखा खाई
सर-सीनेमा देखल जाई
कमरा बिछाइ असमान तरे
बलुरेता पर सूतल जाई

बाटी चोखा मागे पनियाँ
निक लागे चौचक चाँदनियाँ
बा घरी राति अइँकस-मइँकस
अस जड़वल टूटि गइल निनियाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइसे टनटन बोलत रहुए !

टट्टी-कुल्ला करऽ जल्दी
पहिली गाड़ी धरऽ जल्दी
भइले अकाज केतने कमवाँ
मर्दे घऽरे पहुँचऽ जल्दी

सब अपना अपना पहुँचि घरे
मेला ददरी कऽ बाति करे
अजबे चीता गजबे भालू
हाथी उपरा पल्हवान तरे

हउ भऽइँसिया अजबी रहुए
जरसीं गइयो गजबी रहुए
बे हाथ गोड़ क लइका ऊ
कइसे टनटन बोलत रहुए

कबि नीरज क गितियो गजबे
रहुए घोड़वा चलियो अजबे
पहिले नीयन निक पहलवान
लउकत बाड़न अब कहीं-कबे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कातिक किसान कऽ कर्म भूइँ

सोचीं जो कातिक ना आई
कस खेतवा सगरो बोआई
पाकी पूरी कस नउमी के
करिहें उपास काली माई

कातिक किसान क कर्म भूइँ
कातिक किसान क रंग भूइँ
कातिक गोहूँ कातिक गुलाब
कातिक जिनगी क जंग भूइँ

जो सावन बाटे सरसदार
भा फागुन चइत रंगदार
तब बिन सरदी गरमी वाला
ई कातिको बाटे मजेदार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किनकिन कंगन अगहन से जिद

कातिक बीतल अगहन आइल
सौगात ठंढ क ले आइल
सजना अँगना जाए खातिर
कंगना मन ही मन मुसुकाइल

इत साजन मिलन उमंग उठल
उत मात पिता सखि संग छुटल
सुख दुख का रस्सा कस्सी में
मुख रंग चढ़ल मुख रंग मिटल

दिन-दिन कम भइले पऽसिनवाँ
छिन-छिन ठंढाइल मऽहिनवाँ
किन-किन कंगन अगहन से जिद
धइलसि धनियाँ रतिया-दिनवाँ

अद्धी मलमल बक्सा पइठल
मोटिया खादी ऊनी निकलल
निकलल गद्दा तोसक कतहीं
केहु का दुवरा पुवरा पसरल

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कसहूँ सलिया ठरकाइ चहल

कतहीं देखऽ चदरा कमरा
कतही लउके भारी दोहरा
केतने का नरम रजाई बा
केतने ओढ़े धोती तेहरा

केहु का फऽरद खरिदाइ रहल
केहु का रुइया धूनाइ चलल
फटहा-पुरान ले के केहू
कसहूँ सलिया ठरकाइ चहल

केहु सदरी पहिरे अध बहियाँ
केहु सुइटर पहिरे भर बहियाँ
देहियाँ कोटिया केहु केहू का
मफलर लटकल बनि गलबहियाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महिया बा गरम लवाही लऽ

बा जहवाँ उखिया छीलइहें
हरियर गेंड़वा गोरुआ खइहें
सुक्खल पतई चुल्हवा झोंकाइ
खदखद कराह गुरवा होइहें

केहु महमह महिया महकावे
केहु तिलवा भेली पथवावे
रबिया पर रबिया उतरति बा
केहु ले उखिया कंटा धावे

केहु बा बैला नधवाइ रहल
बढ़ जा कहि पीछे धाइ रहल
केहु गाँजल उखिया क्रासर पर
खुद पेरि रहल पेरवाइ रहल

रस में गोरस कचरस काटऽ
सँग ले नुनुगर दाना चाखऽ
पनफल खेतवन में चरऽ साग
काटऽ उखिया गुल्ला माठऽ

फारम नेवरवा देसिलवा
चाभऽ ऊजरकी मलगुबवा
महिया बा गरम लवाही लऽ
एके का पाई रसगुलवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS and Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भरि राति पिंड़ियवा अगोराइल

अचके अगहनवाँ अधियाइल
देखते-देखत पिंड़िया आइल
आपन-आपन पिंड़िया लगाइ
सखिया भुखली केहु ना खाइल

सब सखी-सलेहरि अगराइल
गोलिया-गोलिया कहिं बिटुराइल
पुवरा बिछाइ बिस्तर डँसाइ
भरि राति पिंड़ियवा अगोराइल

देखऽ सखियन क पलटनियाँ
गावत पिंड़िया मनहर बनियाँ
भैरवी फेल एकरा आगे
सूरुज क टूटि गइल निनियाँ

अगहन मनसायन मऽहिनवाँ
संतउ कहँरवा कीर्तनवाँ
खेतवन गदराइल फसल देखि
अगराइल मनवाँ कीसनवाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिठकी ढूँढ़ी ले खाय बलम

जोन्हरी बलिया पुलुई लटके
बनि-बनि चानी-गुच्छवा चमके
छोटकी बड़की अनगिन बलिया
चहुँ खेतवन में मटके-दमके

बजड़ा बलिया लमहर-लमहर
कहिं बीड़र बा कहिं बा भरदर
अजबे महके सँझिया भोरवा
गजबे लउके गोटगर रसगर

सब चिरई खेत उड़ावत बा
केहु ले गुरदेल चलावत बा
बइठऽ बइठऽ कहि चढ़ि मचान
केहु बड़का टीन बजावत बा

जाली गुद्दी कहँ जाली हो
चाउर पुरान ई खाली हो
रहरी कऽ दालि बनल देखते
उठि के टिड्डुकल चलि जाली हो

देवरा चिउरी खा नरम-नरम
दुध भात बजड़वा गरम-गरम
लावा मुँह बा-बा ननदी खा
मिठकी ढूँढ़ी ले खाय बलम

कातिक क अगहन हमदम बा
आराम कछुक कमवाँ कम बा
फफनात फसलिया देखि-देखि
अगराइल मनवा बेगम बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पापी पुसवा आ खड़ा भइल

बीतल जेठवा क दुपहरिया
बीतल भादो क भदवरिया
कट्टी कइसे पुसवा पहाड़
थर-थरँ दलकी मुँह सिसकरिया

गरिबन का घरवा पुवरा बा
पुवरा पर गुदरी गुदरा बा
गुदरा में दुबकल केहू बा
केहू कउड़ा का नियरा बा

पपिया पुसवा आ खाढ़ भइल
अब सउँसे राति पहाड़ भइल
किकुरी मरले कुकुरो का भी
हर हाड़-हाड़ में जाड़ भइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा-बनरा वाली कहऽ

किस्सा माई का मुड़तारी
काथा आजी का गोड़तारी
कहनी बुझनी खातिर कइलसि
बुचिया बाबा सँग ईयारी

अन्हरा वाली आजी कहऽ
बाबा बनरा वाली कहऽ
छोड़ऽ सियरा बघवा वाली
जड़िया का कऽहेले कहऽ

लइकन देइबि ना छूवाई
हऽ जऽवनवाँ हमरे भाई
बाकिर बुढ़वन के छोड़बि ना
ई केतनो ओढ़िहें रऽजाई

केहु क रतिया जागत बीतल
केहु के अगिया तापत बीतल
केहु सूतल कीरिनियाँ फुटान
केहु टुकुर-टुकुर ताकत बीतल

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामा हो कइसे कटी जाड़ि

बा भोर भइल सगरो कोहरा
जहँवा ताकऽ कोहरा-कोहरा
केहू चदरा केहू कमरा
केहू ओढ़ले बाटे दोहरा

हर घड़िया सात बजवले बा
तब्बो अँधियरिया छवले बा
सूरुज बाबा मुँहवाँ उपरा
अबहीं चादरिया लवले बा

हे रामजी घाम करऽ आके
कइके सलाम सुगवा ताके
तोहरा बालक के जड़वत बा
रहँटा फुकि-फुकि तापत बाटे

का कुरुता सुइटर पैजामा
पनही का भितरा पैतामा
रामा हो कइसे कटी जाड़ि
बा फेल भइल हर चरजामा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पोखरा पनियाँ बा ठार भइल
ठिल्ली कुंडा जिउमार भइल
कलिया कुइयाँ गुनगुन पनियाँ
जा ले आवऽ उजियार भइल

बाहर कोहरा भीतर कोहरा
भितरो का भितर ढुकल कोहरा
अइसे में कइसे के केहू
छूई पानी पाथी गोहरा

कतहीं केहू जागल सो के
केहू टट्टी लागल होखे
कसहूँ तइयार भइल केहू
हथवा गोड़वा मुहवाँ धोके

पनियाँ परते हथवा अँगरल
जड़वल सगरो देहियाँ ठिठुरल
बा दसो अँगुरिया सुन्न भइल
अस लागे चू-चू के गीरल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़का कउड़ा बाटे लहकल

केहु अगिया तापे आ बिटुरल
केहु हुक्का पीये आ पहुँचल
दादा दुवरा सबका बिचवाँ
बड़का कउड़ा बाटे लहकल

केहु ले पीढ़ा केहु ले ईंटा
केहू का चुतरा तर बीठा
गुड़ गुड़ हुक्का में से निकले
हर बतियन कऽ कच्चा चीठा

ललुवा क बा लतरी लागल
कलुवा बे बुद्धी कऽ पागल
बा ठार परल मँगरू खेतवा
झगरू क भइँसि बा भागल

सरिसो तीसी क भाव बढ़ल
सिन्हा मनोज के रेल मिलल
जे करिया अच्छर बा भइँसि
ऊहो बर्लिन पेरिस पहुँचल

केहु मेरौनी बीने ऊठल
केहु सगखोटनी छीने सोचल
जेकर भूसा ओराइ चलल
जोगाड़ करे कीने निकलल

छानी-छपरा घर कऽ खपड़ा
अस सीति गिरल भींजल कपड़ा
किच किच पिचपिच गोड़वा भइल
खेतवन डँड़वन घसियन उपरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिखे पतंगा रंग बिरंगा

पूसे मासे दिखे पतंगा
लोग उड़ावे सिखे पतंगा
गंगा घाटी हर सहरन में
कस्बन गाँवन उड़े पतंगा

डोरी पुलुँगी चढ़े पतंगा
धीरे ऊँचे बढ़े पतंगा
छत से भा मैदान खुले में
दिखे पतंगा रंग-बिरंगा

चढ़ि इकतल्ला केहु कइ तल्ला
कटे डोरि तब होखे हल्ला
केहु झल्लाए केहु धा लूटे
कहीं हँसी कहिं मचे बवल्ला

लट्टू कीकेट गोली गेना
बडमिण्टन केहू पूछेना
खिंचड़ी तक नसइल पतंग कऽ
छोड़ि पतंग कहीं टसकेना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकर बतिए कुछ दीगर बा

दिनवाँ में घाम दनाउर बा
रतिया पाला बड़ बाउर बा
तहजर्द रजाई बा जेकरा
ओकर बतिए कुछ आउर बा

जे खाइ भइल धम धूसर बा
मुसड़ी कइले जस मूसर बा
बा दूध घीव रेल्ला रेली
ओकर बतिए कुछ दूसर बा

बाबू क तरधन मजिगर बा
पुतवो जामल चलबीधर बा
माई माने मेहरि जाने
ओकरो बतिए कुछ दीगर बा

बारे में पुसवा का कऽहीं
जेतना कहीं थोरे कऽहीं
बस तीस दिन तक बा पहरा
दिन इकतिसिवाँ ई ना रऽही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुसवो क बाप भइल मघवा

ले बर्फाइल बमवा हथवा
पुसवो क बाप भइल मघवा
जगवा सगरो कइलसि आफति
बिस-बाइस दीन देइ जड़वा

तोरलसि हमवाँ दिहलसि जड़वा
पुसवो क हीलि उठल हड़वा
कमरा खरिदाइल खोमवों का
दुखना क मूइ गइल पड़वा

लतरी बैलन के आवति बा
रहिलो लगहरिया पावति बा
भोगिया क भइँसि बियाइ गइल
जोगिया छेरिया कुँवरावति बा

रऽहरि फुल-फर फफनाइ चलल
सगरो सरेहि गदराइ उठल
बरदाइ गइल भुवरी भँऽइसि
धवरी गइया रेंगराइ चलल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धिरहीं धीरे नेवान आइल

सगरो सिवान गहगह गहगह
चहुँ चिरइन क चहचह चहचह
महकल बहुरंगी फुलवन से
कबिली तीसी महमह महमह

चहुँ दिसि बसंत पीयर धारी
पीयर सरिसो कऽ फुलवारी
हर तिया पिया रँग रंगाइल
कू-कू कुहुकल कोइलि कारी

धिरहीं धीरे नेवान आइल
हर अँगना चउका लीपाइल
कलसा-पानी पीढ़ा धइके
जउवा क बलिया फूँकाइल

फिर सुपवा में ले फटकाइल
गुर घीव सँगे जौ मीसाइल
देवता पित्तर चढ़ाइ ले-ले
सरधा से सब केहू खाइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जै-जै हो माई सुरसतिया

आइलि बसंत पंचिमियाँ बा
माई सुरसती पुजनियाँ बा
चंदा पर चंदा असुलाता
घरवा दुवार दोकनियाँ जा

का बस वाला टेकसी वाला
धरऽ भागल ताँगा वाला
के के-के के चंदा देईं
खिसियाइ गइल ठेला वाला

ले लऽ रसीद सदरी वाला
कुछउ दे दऽ पगरी वाला
ठहरीं तनकी भर बाबू जी
मुल्ला जी पंडी जी लाला

हर राहगीर के घेरि-घेरि
लम्मा वालन के टेरि-टेरि
लइकन से डरि केतने जाना
बरकल जालन मुँह फेरि-फेरि

इ सब साला नक्कल वाला
एगो नाहीं पऽढ़े वाला
इ चंदा बा कि धंधा बा
भुसुरात चलल सइकिल वाला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा बेमतलब हल्ला-चिकार

कतहीं साई दियाइ गइल
कतहीं मूरति खरिदाइ गइल
कतहीं त एक दिन पहिले से
हारन माइक बा आइ गइल

अमवाँ निमियाँ क पतिया बा
झण्डी झालर बहु भँतिया बा
फोटो गुब्बारा बिजुली से
चकमक जगमग भर रतिया बा

कहि जै हो माई सुरसतिया
बा भीड़ लगल देखे झँकिया
बचवा बचिया ले-ले मचिया
चचिया देखे बिडियो-नचिया

मथवा बन्हले पीयर कत्ती
लिक्खल जेपर जै सरस्वती
गड़बड़ी न हो केतने लइका
ले हाथ छड़ी घूमे परती

कहिं एक दूइ झट तीनि चार
लागे मइया कऽ जै-जकार
बुढ़वन क माथा खउलि उठे
सुनि बेमतलब हल्ला-चिकार

घुमते देखते बीहान भइल
टेक्टर क इन्तेजाम भइल
नाचत गावत जै-जै बोलत
हर मुरती गंग-भसान भइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अजबे खिचड़ी तिहवरवा बा

आइल खिंचड़ी असनान चलल
चाउर चिउरा तिलवा बँऽटल
केहू माँगल केहू दीहल
दिन भर जेकरा जेतना सँपरल

परजा घूमे पवनी घूमे
नन्हवा भँटवा बम्हना घूमे
बाची चाची आर्जा कहि-कहि
डोमवा माँगे नाचे झूमे

केहु सुखले फाँके चरर-मरर
ले गूर पटौरा मसर-मसर
केहु दूध डालि के सरर-सरर
केहु दही मिला के चभर-चभर

होरहन में रहिला-होरहवा
उखियन में फारम नेवरवा
ओइसे इ भइया खिचड़ी बा
हर तिहवरवन में तिहवरवा

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खा मजदुरवा अफसर आला

देखऽ बीतलि दुपहरिया बा
निकलल हरिया क हरिया बा
आदी अँचार मरिचा लहसुन
नुन सँगे साग तिजहरिया बा

रहिला पुलुँगी भरि-भरि गलवा
संग चटक मसाला खा सगवा
सी-सी मुँहवाँ में तीत लगल
मिठकी उखिया माठऽ गुलवा

फिर रतिया नुनुगर खिचड़ी बा
चोखा दही सड़सऽड़ी बा
आलू गोभी सब्जी अँचार
चटनी क लागल झऽड़ी बा

ठंढा मौसम खाए वाला
केतनो खा पचि जाए वाला
पंडी जी मुंशी जी लाला
खा मजदुरवा अफसर आला

अजबे खिचड़ी तिहवरवा बा
गजबे एकर जेवनरवा बा
बा मीठ तीत नमकीन चटक
हर गाँव गली घर-घरवा बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन गइल माघ उन्तिस बाकी

ऊ पुस लहरी ई मघबदरी
जेठवा खड़खड़िया दूपहरी
तीनों तनिको बूझी ना जे
घर ए.सी. लगा भइल सहरी

जड़िया बुजरी राँड़ी खाकी
खँड़हर न ढहे न मरे पापी
आखिर बीतलि गिनते कहते
दिन गइल माघ उन्तिस बाकी

जाते माघे कम्मर काँधे
दिनवा लागल सरके भागे
कनवाँ केहू केहू बाँधे
लउके लागल फागुन आगे

दिन बहुरे से लहुरा जाला
दिन खिचड़ी से बढ़िया जाला
दिन फागुन क आगम जानी
हर जीव जगत बउरा जाला

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ए बाबा रे फागुन आइल !

हुक बाँ हँकड़त इ के आइल
चहुँ ओर ओखाढ़त उफनाइल
उठि के देखू देवरा के हऽ ?
भउजी लागत फागुन आइल
हर डाली-डाली मउराइल
हर पत्ता-पत्ता बउराइल
हिजड़ा तक हाथ नचा बोलल
ए बाबा रे फागुन आइल !

फटहा फागुन आ खाढ़ भइल
सगरो देहियाँ रस बाढ़ भइल
दरकत उरोज मसकत अँगिया
हर अंग अनंग अमाय गइल
कच बस में ना कुच बस में ना
रतनार नयनवाँ बस में ना
फागुन भर हमसे मति बोलऽ
का कहि देइब कुछ बस में ना

केहु नोनाइल केहु चोन्हाइल
केहु इठलाइल केहु दिकियाइल
जे साल सुरू से सुनुगल बा
फगुआ नगिचाइल मानि गइल
देखऽ दुवरा पर के आइल
भउजी बोललि फगुआ आइल
कुरती साड़ी चोली चोटी
बा ननदी क मन अगराइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुढ़िया भी करत ठिठोली बा

कहिं अजब गजब क बोली बा
कहिं रंगारंग टिबोली बा
जीजा साली क छेड़छाड़
बुढ़िया भी करत ठिठोली बा

ए रजउ बोलऽ का खइबऽ
सादा खइबऽ जर्दा खइबऽ
हे बिना दाँत बुढ़ऊ बाबा
का बिन कुँचले घोंटी घलबऽ

कहिं पान लवंगिया लाची लऽ
बइठऽ खटिया लऽ माची लऽ
लऽकिसमिस गड़ी छोहाड़ा खा
चाची लऽ बबुनी-बाची लऽ

सबकर सबका से प्यार भइल
सबकर सब जीजा सार भइल
बइमान भइल मौसम अइसन
केरा कऽ बइरि यार भइल

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहु आँखि मारि के मुसुकाइल

कहिं हरियर पीयर गाल भइल
कहिं टहटह लाल गुलाल भइल
सुखले अबीर लेके केहू
मुँह गोरी पोति निहाल भइल

हड़बड़ में छैला आ धमकल
गड़बड़ में रँगवा ना मीलल
झड़फड़ में गोरी उछल परल
कहिं कीच चलल कहिं मूत परल

छैला अँगना बिछिलाइ गइल
गोरी मोरी ढमिलाइ गइल
देवरा सन्हना में ऊब-चूभ
भउजी हँसि-हँसि अगराइ गइल

कहिं चहका झर्र कबीर उठल
कहिं टहका फर्र अबीर उड़ल
कहिं होरी सर्र जोगीरा पर
डँफ झालि झाँझ ढोलक बोलल

केहु आँखि मारि के मुसुकाइल
केहु ओठ काटि के बलखाइल
ई प्यार सनल फागुन पूवा
जे ना खाइल ऊ पछताइल

मति केहू कऽ मन हहरावऽ
मति केहू कऽ मुँह भहरावऽ
दिल लेके, दर्द दगा देके
मति केहू के तू कहँरावऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन लहालोट सिवरतिया बा

फागुन सिवरतिया, का कहलऽ !
सिव दुलह बरतिया, का कहलऽ !
का सहर गाँव मंदिर-मंदिर
सोभा फुलपतिया, का कहलऽ !

गायन रँगरँगियाँ, पूछऽ मति
बादन बहुभँतिया, पूछऽ मति
नचिया-कचिया क भी बतिया
कस सीव अरतिया, पूछऽ मति

सिव सजल सुरतिया, का कहीं !
अस लगे मुरतिया, का कहीं !
घंटा-टन डम-डमरू-नगाड़
का नगर देहतिया, का कहीं !

जस माघ पुजन सुरसतिया बा
भादो हरि जनमी रतिया बा
तस कहल बने ना मति मारे
मन लहालोट सिव रतिया बा

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आईं फागुन से प्यार करीं

फागुन भर भाँग धतुर्रा का
पूड़ी-रबड़ी पर भुर्रा का
ना चढ़ल नसा फागुन जेकरा
ओकरा ताड़ी का ठर्रा का

केहु बिन गाँजा गदहा बसंत
केहु बिन अफीम उल्लू बसंत
घोंघा लेंढ़ा थोथा बसंत
फागुन सगरो बगरा बसंत

इ हर मौसम कऽ राजा हऽ
ना कहिं जोड़ ए माजा कऽ
गारी भी मींठ अँगारी बा
फागुन कऽ इहे तकाजा हऽ

आइँ फागुन से प्यार करीं
तकरार जहाँ मनुहार करीं
इकरार करीं जीवन भर कऽ
बस प्यार करीं इसरार करीं

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फागुन गुँझिया खा के जइहऽ

फागुन अंतिम दिन जरे समत
एहि दिन होलिका जरल अभिमत
फागुन गुन गिनत गान गावत
आइल दिन चइत नया संबत

छऽत्तिसो बरन बाम्हन लाला
होलिका दहन पर बिटुराला
फुँकिके सम्मत के घेरि घूमि
नाचे गावे बनि मतवाला

केहु होरी चहका गावेला
होलरी लुकार ले धावेला
डफ ढोल झाल बहु बाजा ले
केहु मूड़ी हिला बजावेला

फागुन गुँझिया खाके जइहऽ
बा इहे निहोरा फिर अइहऽ
सौ तीनि तीस दिन बाटि जोहब
आ सबका सँग होरी गइहऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब तेरहवाँ संवाद सुनींऽ

बा तींस दिनन कऽ मास बनल
दुइ बरिस बाद मलमास बढ़ल
कुछ जन खातिर सौ तीनि साठि
दिन कऽ महवा ई खास चलल

काथा कहंत जगिया करंत
अइसन खातिर पुसवो बसंत
जा गाँव गँवार गरीबन के
बा लूटि रहल बनि महासंत

इनका खातिर कइसन सरदी
कइसन बरखा कइसन गरमी
तजु माया उपदेससु घूम सु
खोजसु माया बनि बेसरमी

तब हर माहन का बाद सुनींऽ
अब तेरहवा संबाद सुनींऽ
उपराइल ई बा नया माह
एकर विवाद अपवाद सुनींऽ

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा सियरा-रंग बदलले बा

मति पूछीं इंटर बीए कऽ
इंजियरिंग कऽ एमबीए कऽ
इस्कोप आजु क कथा कहऽ
निक धंधा खाए जीए कऽ

देखीं जाई गावाँ-गाईं
परबचन बढ़ल ठावाँ-ठाईं
भंडारा जगिया जगह-जगह
साधू बनले केतने चाईं

बा सियरा रंग बदलले बा
साधू कऽ भेस रँगवले बा
भरमा के खाके दूध घीव
इ चेहरा के चमकवले बा

बाबा बड़ बाल ब्रह्मचारी
अबिकारी बेद शास्त्र धारी
परनारी देखसु छूवसु ना
ना घुमसु लेइ लोटा थारी

केहु महाराज केहु स्वामी जी
केहु साधारन केहु नामी जी
केहु अमुकानन्द अजोध्या कऽ
केहु बा बृन्दाबन धामी जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधु बनाम सवाधु उवाच

हम दुनियाँ खातिर मूइलाँ
पइसा कउड़ी ना छूइलाँ
फल दूध अहारी बिना अन्न
बस राम भरोसे जीहिलाँ

दस-बिस बउराहन लेइलाँ
कुछ चाटे खातिर देइलाँ
बाबा बड़ पहुँचल बाड़न ई
कहि-कहि परचार कराइलाँ

केहु बेटा नाती माँगेला
बड़ रोग हटावल चाहेला
आवे हमरा के हें ऊहो
जेहि भूत परेत सतावेला

हम कुछउ नाहीं जानीलाँ
बस भगवाने के मानीलाँ
देके परसाद भभूति फल्ल
जे आवे कष्ट भगाइलाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीं सुनीं भागवत राम कथा
सिव सती मोह जानकी ब्यथा
कुछ गाके कछुक कथवली कहि
भक्तन भरमाईं मती जथा

कुछ बाति बताईं भक्ती कऽ
भक्ती में बहुते सक्ती कऽ
उक्ती उत्तम सुक्ती सुन्दर
कहि जुक्ति बताईं मुक्ती कऽ

जे करे साधु-संतन सेवा
ऊ पावे मनचाहा मेवा
जे दे साधुन दिल खोलि दान
भव पार करे ऊ बिन खेवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जट्टीं मलकिन मेहरारुन के

कान्हा क जनम कराइलाँ
तुलसी क ब्याह रचाइलाँ
कुछ लूटे खाए खातिर हम
नाना तिहवार मनाइलाँ

कुछ रटि इस्लोक उचारिलाँ
बिच-बिच अँगरेजी झारीलाँ
हरि कृपा बिना ना संत मिले
समझा गुन-ज्ञान बघारीलाँ

मजदूरन नान्हन के ठग्गीं
बकलौल किसानन के ठग्गीं
जट्टीं मलकिन मेहरारुन के
जे तनिको भर आवे लग्गीं

हमरा पासे अइसन लकड़ी
लीं तनिकी भर सूघीं पकड़ीं
एक दिन आ जाइब काबू में
बेकाबू बाबू मति अकड़ीं

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुझक्कड़ उवाच

केतनो कहबऽ अब आई ना
पजरा तोहरा सब जाई ना
लागी लकड़ी ना सबका पर
जे भगवत भक्त ठगाई ना

ऊ किसन गुपाला आ ठगलन
ठगि ई कर दंडी भी भगलन
ठगलन केतने का नाँव धरीं
अब बुझक्कड़ ढिग ना लगिहन

बहु ठग नेता, ठग व्यापारी
ठग अधिकारी, ठग सरकारी
बाकिर मठ आश्रम बना-बना
ठग साधुन भइली भरमारी

डाकू गुंड़ा भइले साधू
बहु आतंकी बनले साधू
नकली साधुन गोहूँ सँगवा
घुन सरिस पिसा असली साधू

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहाँ अजब ई कहाँ गजब ई

ना पूस कँपल ना जेठ जरल
मौसम क माया ना ब्यापल
अइसन जन खातिर थोर-ढेर
ई तेरहवाँ संबाद रहल

कइसन लागल चइत सवनई
भादो कातिक माघ फगुनई
बिचे-बिचे बइसाख जेठ बहु
अगहन आदिक माह गवनई

आपन गावल केहि न मिठई
भले तीत चाहे हो खटई
बाकिर रउवा माह तेरहवाँ
कऽ कस लागल ठाट-ठगनई ?

कहाँ नीक, कहँ भइल भदगई
मन रोवाँस कहँ, उठल ठहकई
चीखि लीखि हर छंद बताईं
कहाँ अजबई, कहाँ गजबई

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चलो किसी गाँव चलें

कल्पित कथाओं के दिन
वाचक आकाओं के दिन
विश्वास विनय श्रद्धा भक्ति
अन्धी आस्थाओं के दिन
अब नहीं रहे नगरों में

कोई नहिं सुनता राम कथा
न ही राधे-श्याम कथा
कथा शिव हनुमान के दिन
भागवत महा पुराण के दिन
अब नहीं रहे नगरों में

भक्त भक्ति की बातें
भक्ति में शक्ति की बातें
सरस सुन्दर सूक्ति के दिन
मुक्ति हेतु युक्ति के दिन
अब नहीं रहे नगरों में

खेल राजनीति अर्थ
बाकी बकवास व्यर्थ
कीर्तन यज्ञ भंडारों के दिन
लीला रास नजारों के दिन
अब नहीं रहे नगरों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चलो किसी गाँव चलें
जहाँ मिले ठाँव चलें
सेठ निर्मित धर्मशालाओं के दिन
भीड़ भरे हालों के दिन
अब नहीं रहे नगरों में

गाँव में गँवार अब भी
भक्तिनें भरमार अब भी
खाली सुबह-शाम के दिन
फुरसती क्षण आराम के दिन
अब नहीं रहे नगरों में

अब चारा नहीं गाँव के बिन
सहारा नहीं गाँव के बिन
महाराज स्वामियों के दिन
अयोध्या ब्रजधामियों के दिन
अब कहाँ महा नगरों में ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूरब का गर्व-राखी का पर्व

छोटी बहना के मन कैसी मधुर-मधुर आशाएँ
भइया जीए लाख बरिस मन ही मन अभिलाषाएँ
आज अटल विश्वास बना है भाई के आवन का
अनुपमेय त्यौहार निराला पूनम दिन सावन का

ज्यों सावन की सरिता सागर मिलन हेतु उफनाए
मन पंछी बहना का उड़-उड़ भाई के ढिग धाए
याद करे यह भले प्रवासी भाई हो लन्दन का
अनुपमेय त्यौहार निराला पूनम दिन सावन का

सूत-सूत अनुस्यूत प्यार है धागे में राखी के
जिसे बाँध हिय हर्षित बहना उड़ती बिन पाखी के
रोली चन्दन कर अभिनन्दन भाई मन भावन का
अनुपमेय त्यौहार निराला पूनम दिन सावन का

भाई दे आशीष असीमित स्नेह दुलार बहन को
उसके सुख के लिए करे न्यौछावर तन मन धन को
रूठ गई बहना, आया यह पर्व मनावन का
अनुपमेय त्यौहार निराला पूनम दिन सावन का
मेवाड़ी बहना की राखी मुगल हुमायूँ पाया
क्षत्राणी का भाई बनकर फूले नहीं समाया
रक्षा का दे वचन किया सम्मान पर्व पावन का
अनुपमेय त्यौहार निराला पूनम दिन सावन का

यूँ तो यह संसार पटा है भाई और बहन से
जन से धन से नये-नये हर सुख के संसाधन से
किन्तु कहाँ सुख सार प्यार के इस विशिष्ठ बंधन सा
अनुपमेय त्यौहार निराला पूनम दिन सावन का

कहीं मधुर मिष्ठान्न कहीं राखी झिलमिल तारों सी
जन संकुल शोभायमान हर बीथी बाजारों की
पर्व नहीं, यह गर्व पूर्व-संस्कृति-ध्वज फहरावन का
अनुपमेय त्यौहार निराला पूनम दिन सावन का

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कजरी लइया दइया नहिं भाए

गरमी के मारे छुहारे हुए सुखि
सावन सावन टेर लगाए
आए नहीं, बिलमाए कहाँ
कजरा बदरा की न पाती पठाए
नीर विना नदिया हहरे
हरियर बगिया पल-पल पियराए
दूध न दे गइया कजरी
कजरी लइया दइया नहिं भाए
दादुर मोर पपीहा न बोले
न खोले कपाट बयार सताए
बोले पिया नहिं, डोले जिया नहिं
आस हिया-दियना बुझा जाए
सावनई सावाँ भदई
मकई ककरी, जरि ज्वार झुराए
धान जरे कहीं पान मरे
कहीं केरा बेचारा कथान सुखाए
है न झुलाने ही वाला कोई
नहिं झूला, न झूलने वाली लखाए
रूठ गए काँधा सगरो
बगरो राधा रीते घट जाए
रे निष्ठुर निदयी मुदई
हम तेरी अदा पर मर गए हाए
आग लगावन काहें को तू
मन भावन सावन नाम धराए
दाह भइ अस, आह गई अब
बची कराह, कराहि न जाए
राम बदन तन, बदहवास मन
सावन सुधि हर स्वाँस समाए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सखी शरद आए

मलयानिल प्रत्यूष प्रभा चढ़
सखी शरद आए

गई बादलों की अठखेली
झर-झर झिम-झिम संग सहेली
घन गर्जना कौंध चपला की
जाने गुम किस गई हवेली
हुए निरभ्र ब्योम में चहुँ दिसि
धूप खिलखिलाए
सखी शरद आए....

लगी पाथने उपले धनियाँ
पिया साथ में खेत सोहनियाँ
घर-घर-घर, घर-बाहर ट्रेक्टर
यत्र तत्र हल-बैल सिवनियाँ
बाल पिता को, गृह-मुड़ेर पर
खंजन दिखलाए
सखी शरद आए....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बौर-बौर में फफनी फलियाँ
सरित कूल द्रुम दल गलबहियाँ
बाँस बनों के विहग बसेरे
मधु रव चहचह की रँगरलियाँ
हिरन चौकड़ी लखे बटोही
बाट भटक जाए
सखी शरद आए.....

फूल बनी कुम्हड़े की कलियाँ
भौंरे गुन-गुन, उड़ें तितलियाँ
तरकारियाँ सुशोभित प्रमुदित
छानी छत छितनार लौकियाँ
अनुदिन तुहिन-फुहार धरा पर
रजनी बरसाए
सखी शरद आए....

माँ दुर्गे की पूजा पावन
लीला ललित राम मन भावन
चारु चाँदनी चित्त चुराए
निरखि लजाए फागुन सावन
नीरव शांत सरित-सर-पोखर
निर्मलता छाए
सखी शरद आए....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चइत का होड़ में केहु न आवे

फागुन मास त होरी जरे
असली हिय होरी त चइत मनावे
साठ बरिस बुढ़िया भउजी
जहाँ अस्सी बरिस बुढ़वो मन भावे

माघ छिछोर बा फागुन चोर वा
सोर बा चइत डकइत कहावे
नीनि में माति उठे बलमा
दूसरो का केवाड़ी के पीटि जगावे

गंध गुलाब उड़ाइ हँसे
अमवाँ फुनुगी-फुनुगी बउरावे
कुहू-कुहू करे कोइलिया
केकरा हियरा नाहीं कसक जगावे

देबि दरस नवरातर चइत में
राम जनम सखि सोहर भावे
चइत में चइती कटे खेतवा
गरिबो अगराइ के चइता गावे

चइत अँजोर क राति चहक
चहुँ चाँदनियाँ हर चित्त चोरावे
चइत हँसोड़ बा चइत बेजोड़ बा
चइत का होड़ में केहु ना आवे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दीप जलाएँ

चल ना रे इक दीप जलाएँ

मेरे तेरे उसके हर कर
दिया दिया हो, दिया सभी घर
नीचे ऊपर भीतर बाहर
जिया जिया में, दिया हिया हर
जो रूठे हों, उन्हें मनाएँ /चल ना....

एक-एक मिल दीपक अनगिन
ज्योति वर्तिका घटे न पल छिन
तेल प्यार का इतना डालें
बढ़ती जाए ज्योति रात दिन
मेरा तेरा भेद भुलाएँ / चल ना....

पर हिताय आलोक बनें कुछ
दीप वर्तिका सरिस जलें कुछ
एक दिये को कम मत समझें
दिया दिया से दिये जलें कुछ
दीन-दुखी जो गले लगाएँ / चल ना....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सावन क सोमार क कजरी

सखि सावन क हो
सखि सावन क आइल बहार बा
सिव जी क सोमार बा ना

चलऽ झूमी नाचीं गाईं
चली भोला के रिझाईं
चली भोला के रिझाईं, महादेव के मनाईं
चलऽ चलीं जहाँ हो
चलऽ चलीं जहाँ भोला दरबार बा, सिवजी क....

सिर सोहे ससि गंग
गले लटके भुजंग
गले लटके भुजंग, देखि लोग होखे दंग
अंग-अंग आली हो
अंग-अंग आली अजबे सिंगार बा, सिवजी क....

केहू कजरी कढ़ावे
केहू ठूमरी सुनावे
केहू ठूमरी सुनावे, केहू खेमटा कढ़ावे
बाजे ढोल झालि हो
बाजे ढोल झालि झाँझ भनकार बा, सिवजी क....
भजऽ मनवाँ रमाय
ओऽम नमः शिवाय
ओऽम नमः शिवाय, भजऽ माया बिसराय
बिना सीव भजे हो
बिना सीव भजे नाहीं निसतार बा, सिवजी क....

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहिं चोरी-चोरी कतहीं बरजोरी

नाना साज सजे डफ ढोल
बजे खँजरी कहीं चले थपोरी
पग सँग कटि सिर हाथ नचावत
धूम मचावत गावत होरी

खोरी-खोरी रंग घोरी-घोरी
कहीं चोरी-चोरी कतहीं बरजोरी
दइया निदइया कन्हइया बड़ा
दौराइ धरी कर कंचुकि मोरी

बालन भालन गाल गुलालन
लालन लाल लखे नहीं खोरी
कोरा लखे नहिं ग्वाला कोइ
खोजले न लखे कोइ ग्वालिनि कोरी

भीर अभीरन में धरि कान्ह को
बाहर ले गइ राधा गोरी
भाइ करी मन की अपनी
कटि हाथ लगाइ पितम्बर छोरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चइत क चइता

कब देबऽ सिव दरसनवाँ हो रामा, सिवानी के सइयाँ
सिवानी के सइयाँ, परीं तोरे पइयाँ, कब देबऽ....

सीस जटा ससि सुरसरि साजे, भस्म भुजंग गौर तन राजे
बिच्छी गोंजरऽ गहनवाँ हो रामा, सिवानी के सइयाँ

एक हाथ तिरसुलवा चमके, दुसर हाथ डमरू डम डमके
नन्दी बूढ़ बहनवाँ हो रामा, सिवानी के सइयाँ

आजा ना सिव मोरा भवनवाँ, षटमुख करिमुख लेइ ललनवाँ
पारवती जी का संगवाँ हो रामा, सिवानी के सइयाँ

मानसा पुरा देतऽ, मोरा घरे आ जइतऽ
राम बदन अरमनवाँ हो रामा, सिवानी के सइयाँ

कब देबऽ सिव दरसनवाँ हो रामा, सिवानी के सइयाँ
सिवानी के सइयाँ, परीं तोरे पइयाँ, कब देबऽ.....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

→चोट-कचोट आ एकरा बावजूदो लोक राग-रागिनियन का जरिए जिजीविषा के पुख्ता होत सुर कृति के प्राणवान बनावत बा । कतहीं कुदरत के मानवीकरन कइल गइल बा, त कतहीं मानवो के कुदरतीकरन के झलक मिलत बा ।

भासा के पनिगर प्रवाह अइसन, जइसे कवि भासा पर अँसवारी कसले होखे आ कबीर के 'भासा बहता नीर' के चरितार्थ कइले होखे । कतहीं अलंकारन के छटा देखते बनत बा, त कतहीं भोजपुरी के खाँटी टकसाली शब्दन, मुहावरन आ लोकोक्तियन के लालित्य । सोन्ह-मीठ माटी के सवाद-गमक शुरू से आखिर ले बरकरार बा । ई कवि के लमहर साधना के सबूत बा ।

प्रो. रामबदन जी पेशा से शिक्षक रहलीं, गीत-गवनई में उहाँ के आजुओ मन रमेला, अध्यात्म उहाँ खातिर सामाजिक सरोकार के एगो जरिया ह, एह से उहाँ के भोजपुरिया गाँव-गिरान के, भोजपुरिया मनई के मन-मिजाज के, मजूर-किसान के एक-एक गतिविधि के ना खाली देखले-महसूसले बानीं, बलुक खुदो किसानी आ कुदरती जिनिगी के आनंदातिरेक में बहत आ रहल बानीं । एही से उहाँ के हरफनमौला व्यक्तित्व एह कृति में खुलि के निखरल बा । प्राकृतिक बिम्बन-प्रतीकन के चटकार इस्तेमाल, मिथकन के आजु के संदर्भ में जियतार प्रयोग आ किसानन-मजूरन में ग्रामदेवता के छवि के चित्रण कृति के बेशकीमती बनावत बा । किसान-मजूर केन्द्रित कृषि संस्कृति सही माने में भोजपुरी संस्कृति ह, जवना में तमाम तरह के बेसम्हार पीर के पहाड़, लोकराग कढ़ावत जोशा-खरोश का सँगे लाँघे आ जीवटता से इतिहास रचेके फितरत बा । कुदरत का सँगे गलबहियाँ डलले ई मेहनत के बारहमासा एहू से मूल्यवान बा कि एह में भोजपुरी लोक संस्कृति के अभिभूत करेवाली जियतार झलक आदि से इति ले झलकत बा ।

■ भगवती प्रसाद द्विवेदी
पूर्व महामंत्री
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन,
पोस्ट बॉक्स 115, पटना-800 001 (बिहार)
मो०: 09430600958

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

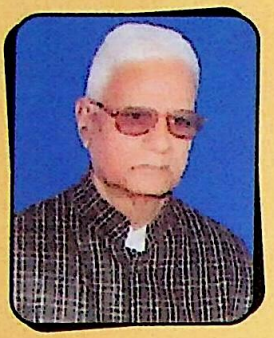

राम बदन राय

माई स्व० राम सँवारी देवी क बतावल जनम, 1948 का कुवार क अमवसा का दिने, गाजीपुर (उ०प्र०) का जोगा मुसाहिब गाँव में । सर्टिफिकेटी तिथि 7 जुलाई 1950 । पिता स्व० शम्भू नारायण राय 'भक्तराज' ।

कृति

- ★ गँवई गुहार (काव्य-संग्रह), फिरकी वाली (उपन्यास), कश्यप कीर्ति (इतिहास), शिवायन (खण्ड काव्य), कृष्नायन (प्रबंध काव्य) ।
- ★ 'जनवार्ता' दैनिक वाराणसी आ 'अगुआ दस्ता' साप्ताहिक युसुफपुर, गाजीपुर में क्रमशः 'शोचनीय जी सोचते हैं', 'राम बदन राय का रविवारी रोजनामचा' स्थायी स्तंभन क कुछ महीना तक लेखन ।
- ★ कॉलेजी पत्रिका 'मनीषा' क संपादन।
- ★ डि० का० खरडीहा, गाजीपुर क संस्थापक, स्वतंत्रता सेनानी स्व० बृज मंगल राय- स्मृति ग्रंथ क संपादन ।
- ★ अपना गाँव का 'महा मंगलेश्वर धाम' का निर्माण में तन मन धन से सहयोग, आ बालिका विद्यालय का निर्माणार्थ, एगो नाट्य संस्था बनाके धनार्जन खातिर, गाँव-गाँव घूमि के स्वरचित नाटकन- 'पिघल उठा चम्बल', 'गरीबों की आवाज', 'शहीद-ए-कश्मीर', 'कण-कण में भगवान', 'औरंगजेब का सिरदर्द' आ 'अरावली का शेर' आदि क मंचन ।
- ★ ढेर सारी रचना रेडियो से प्रसारित, पत्रिकन में प्रकाशित ।
- ★ व्यंग्य, कहानी आ बाल-कवितन आदि क कई किताब प्रकाशन का 'प्रतीक्षा में ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.